RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 अगस्त 2023
डाक प्रेषण तिथि : 29 अगस्त-01 सितम्बर 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 10
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 64
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

हुशि उ चौ श्री ज ग ना ना ©

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

खमत खामणा

क्षमायाचना

कृपा

दया

क्षमादान

शुभेच्छा

ग्लानि

माफ करना

शान्ति

Sorry

Apologies

प्रायश्चित्त

खंति

खेद

खामेमि

क्षमा

माफी

Forgive

अफसोस

धीरज

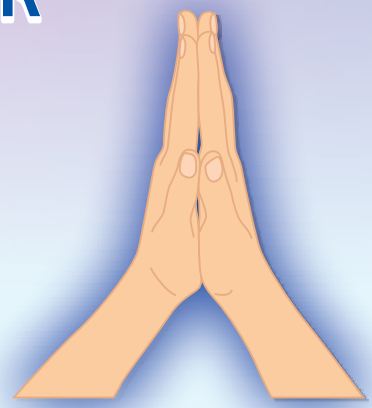

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972

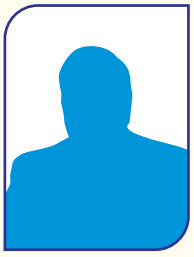

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966

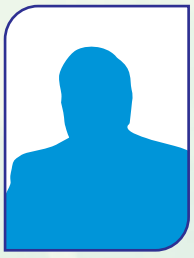

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्रीमती कुसुमजी कोटड़िया
कोण्डागाँव
MID No. 135417

श्री रतनलालजी साँखला
अजमेर
MID No. 153597

श्रीमती प्रेमलताजी नंदावत
बेंगलुरु
MID No. 188833

श्रीमती सुन्दरदेवी सुराणा
बेंगलुरु/गंगाशहर
MID No. 116163

श्री पारसजी छाजेड़
धमधा
MID No. 140335

श्री पारसजी खेतपालिया
ब्यावर
MID No. 153432

स्व.श्री रिखबचंदजी सोनावत
भीनासर
MID No. 195591

श्री मनीष उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 129180

श्री मेघराजजी पुगलिया
कोलकाता
MID No. 103429

श्री सुरेशकुमारजी नांदेचा
खाचरोद
MID No. 105316

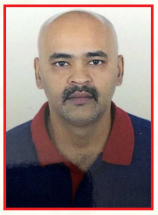
श्री राजेशजी कटारिया
बेंगलुरु
MID No. 129139

श्री पारसजी छल्लाणी
सोनाली
MID No. 194511

स्व. श्री ओमप्रकाशजी भूरा
देशनोक
MID No. 148228

श्री प्रसन्नजी सुराणा
रायपुर
MID No. 109641

श्री कान्तिलालजी कटारिया
रतलाम
MID No. 185412

श्रीमती आशादेवी कटारिया
रतलाम
MID No. 185424

श्रीमती रतनीदेवी लूणावत
दिल्ली
MID No. 194611

श्री मोतीलालजी मुणोत
जलगाँव
MID No. 106053

स्व.श्रीमती तारादेवी सुराणा
गंगाशहर
MID No. 116416

श्री राजमलजी चौरड़िया
जयपुर
MID No. 127158

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443

स्व. श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535

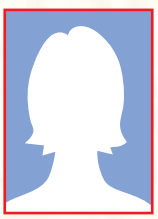
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

श्री सोहनलालजी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. 135732

श्री अनिलजी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. 127002

चतुर्थ चरण

श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा–बेरला
MID No. 195647

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606

श्री विजयकुमारजी टंच
बदनावर
MID No. 113207

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा- सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी- अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुम्बई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा- बदनावर

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्री कमल जी बैद-मुम्बई * श्रीमती इन्द्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राज कुमार जी बाफना-हरदा * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भण्डारी-जावरा * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुण्डरदेही * श्रीमती मनोरमा देवी बैद-रायपुर * श्रीमती सुन्दर बाई कोटड़िया-कोण्डागाँव

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री भागचन्द जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम

|| जय महावीर ||

राम चमकते भानु समाना

जैन संस्कार पाठ्यक्रम

Exam Date 01 Oct. 2023

परीक्षा

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा भाग 1 से 12 तक आयोजित होगी, जिसमें सकल जैन समाज के सभी वर्ग व आयु के परीक्षार्थी यह परीक्षा दे सकते हैं।

(भाग 1 से 4 भाग तक)

12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों एवं 55 वर्ष से ऊपर जो लिखने में असमर्थ हो उनके लिए ओरल परीक्षा होगी।

कृपया अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रभावना करावें।

अधिक जानकारी के लिए इस मोबाइल नंबर पर सम्पर्क कर सकते है :-

7231933008

।। जय गुरु नाना।। ।। जय महावीर।। ।। जय गुरु राम।।

राम चमकते भानु समाना

हार्दिक क्षमायाचना

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ।।

रत्नत्रय के महान् आराधक **परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.** एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य **उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा.** के चरणों में वन्दना। महान् पुण्यवानी के उदय और आचार्य भगवन् की महत्ती कृपा से संघ सेवा का अनुपम अवसर मिला है। विगत वर्ष में हमारे द्वारा संघ का कार्य करते हुए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जाने-अनजाने में किसी कार्यप्रणाली, शब्द या व्यवहार से किसी भी सदस्य के निर्मल मन को ठेस पहुँची हो, आहत हुआ हो तो हम मन, वचन, काया से आप सभी से क्षमाप्रार्थी के भावों के साथ निवेदन करते हैं कि आप सरल हृदय एवं उदार मन से क्षमा प्रदान करने का कष्ट करें।

मिच्छामि दुक्कडं।

क्षमा करना और क्षमा माँगना, सरल हृदय के भाव हैं, अपना-पराया, जीव-अजीव सभी मेरे समान हैं। वैरभाव नहीं रखूँ किसी से, ना ही कोई मुझसे रखे, हाथ जोड़कर माँगू क्षमा, सभी वीर क्षमादान करें।।

:: क्षमाप्रार्थी ::

समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
श्रमणोपासक टीम

हम सभी एक ही गुरु की छत्रछाया में समष्टि रूप समाज का हिस्सा हैं और श्रमणोपासक आपकी अपनी पत्रिका है। श्रमणोपासक के उन्नयन और विकास में आप जैसे सुज्ञ पाठकों एवं लेखकों का सहयोग प्रथम पंक्ति में अंकित है। अत: आपकी अपनी पत्रिका 'श्रमणोपासक' में प्रकाशित करने हेतु आपकी रचनाएँ सादर आमंत्रित हैं। कृपया यथाशीघ्र ही अपनी रचनाएँ हमें प्रेषित कर संघ के मुखपत्र के उत्थान में सहयोग प्रदान करें।

- श्रमणोपासक टीम

।।जय गुरु नाना।।

।।जय महावीर।।

राम चमकते भानु समाना

।।जय गुरु राम।।

समता युवा राष्ट्र स्तरीय शिविर

नीमच में

Empower U

Journey Towards Holistic Growth

09-10 सितम्बर 2023

आयु वर्ग 18-45 वर्ष

आत्म-खोज और व्यक्तिगत विकास की दिशा में एक अविश्वसनीय यात्रा के लिए तैयार हो जाएं। एक-दूसरे से जुड़ने और एक साथ अपने क्षितिज का विस्तार करने के इस अनोखे अवसर से न चूकें।

संयोजक
समता युवा संघ, नीमच

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
(अंतर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

।। जय महावीर ।।

।। जय गुरु नाना ।।

।। जय गुरु राम ।।

जीव दया रखने से मन में, मिट जाए भव पीर... सबको समझे निज समान, कह गए प्रभु वीर...

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

जीवदयाणं

(जुलाई-अगस्त-सितम्बर)

द्वारा सामाजिक कार्य की श्रृंखला में प्रस्तुत है

सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं

- कम से कम एक दिन के लिए कत्लखाने बंद करवाना ।
- मांसाहारी व्यक्ति को प्रेरणा देकर मांस भक्षण छुड़वाना ।
- गौशाला में गाय को रोटी, चारा, गुड़ आदि खिलाना ।
- मच्छरदानी का वितरण करना । मच्छर मारने में उपयोग होने वाले उपकरणों को रोकना ।
- पक्षियों को दाना-पानी देना ।

क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं

- जिस औषधि/दवा पर हरे बिंदु का निशान हो उसी का सेवन करना । (लाल बिंदु वाली का दवा का सर्वथा त्याग करना।)
- वृद्धाश्रम/अनाथालय/मूकबधिर व दिव्यांग विद्यालय एवं संस्था आदि में सेवा देना ।
- शारीरिक श्रम करते हुए रिक्शाचालक/कुली/कड़ी धूप में मेहनत करते हुए मजदूर आदि को साता पहुँचाना ।

रोको मन की गाड़ी को, इसमें लाल का चिह्न है।
ढूँढो हरा बिन्दु, हम जैन सबसे भिन्न हैं।।

आप सभी से निवेदन है कि अपने अपने क्षेत्रों की रिपोर्ट बनाकर अवश्य भेजें।

॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

Presents

संकल्प-पत्र

Sadhumargi Women's Motivational Forum

भ्रूणहत्या त्याग

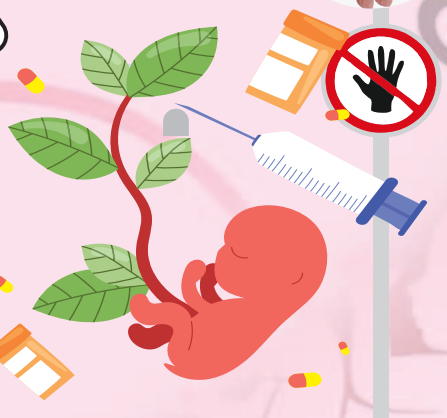

आओ मिलाएँ हाथ और हुँकार भरें,
भ्रूणहत्या का एक साथ, हम बहिष्कार करें।
महावीर की सन्तान हम,
'जीयो और जीने दो' का प्रण करेंगे,
आज ही भ्रूणहत्या त्याग,
संकल्प–पत्र हम भरेंगे।।

Google Form

Google Link ▸ https://forms.gle/7Sm9pDxZqFeqn12r5

Team - वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

तो देर किस बात कि आज ही संकल्प भरें एवं 7231033008 पर व्हाट्सअप द्वारा भेजें।

॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

Sadhumargi Women's Motivational Forum

साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

Presents

जानिए जैन धर्म का विज्ञान, पाकर नव तत्व का ज्ञान।

Activity Coming Soon

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह	:	10
श्रमणोपासक हैडलाइन्स	:	14
नीमच चातुर्मास समाचार	:	15
क्रोध, वैर का उपचार : क्षमा	:	30
विविध समाचार	:	33
विविध भेंट मार्फत	:	41
विनम्र श्रद्धांजलि	:	46
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति	:	49
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ	:	54

सुविचार

सन्तोष

सन्तोष के हाथी पर, घूमे जो भी बैठकर।
लोभ-श्वान उसे कभी, काट नहीं पाता है।।
कुटि में सन्तोषी नर, सुख पाता मन भर।
असन्तोषी सुरेश्वर, दु:ख को बढ़ाता है।।
सन्तोषी को मिलता है, सब अपने ही आप।
सन्तोषी न करे पाप, जग में पूजा जाता है।।
वीर कहे गौतम से, सन्तोष परम धन।
मिला यह जिसे धन, नाथ कहलाता है।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिन्तन

अपना तंत्र अपने हाथ

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

[redacted] मर्यादा को बन्धन मानने वाला उसमें छटपटाता है, उसे वह रास नहीं आती। वह ईहा-अपोह-मार्गणा की गवेषणा करता रहता है। यानी टोह में लगा रहता है कि कब अवसर प्राप्त हो और कब वह उससे छुटकारा पाए। इसके विपरीत जो मर्यादाओं को सुरक्षा कवच मानता है, वह उनका भली-भाँति पालन करता है। यानी वह उन मर्यादाओं में कहीं भी सुराख नहीं होने देता। क्योंकि सुरक्षा घेरे में थोड़ा भी सुराख सुरक्षा का भेदन करने में समर्थ होता है। एक सुराख नौका को डुबा देता है, वैसे ही मर्यादा कवच का छोटा-सा छेद जीवन को असुरक्षित बना देता है। ऐसा सोचकर मर्यादाओं की सुरक्षा के लिए वह कटिबद्ध रहता है।

बुद्धि का प्रयोग करने के पहले व्यक्ति को बहुत अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि उसका परिणाम क्या होगा? क्योंकि इतिहास उठाकर जब भी कोई देखेगा तो इस बुद्धि का नृशंस ताण्डव दृश्य उसके समक्ष उभर आएगा। रामायण-महाभारत में इस बुद्धि का ही खेल है। घर-परिवार-समाज में जो विविधताएँ पैदा होती हैं उनमें मुख्यता इस बुद्धि की ही है। इसलिए इसका प्रयोग करने से पूर्व बहुत अच्छी तरह से विचार किया जाना चाहिए कि इसके प्रयोग का परिणाम क्या होगा? कुछ वर्षों पूर्व की घटना पर ही यदि विचार करें तो इन्दिरा गांधी की हत्या व उसके बाद का उन्माद इसी बुद्धि का खेल था, जिसमें पता नहीं कितने निर्दोष लोग मारे गए। कितनी बहिनों का सुहाग उजड़ गया तो कई माताओं की गोद सूनी हो गई। आतंकवाद को प्रोत्साहित करने वाली यही बुद्धि है। बुद्धि का सम्यक् दिशा में प्रयोग व्यक्ति को मुक्ति तक पहुँचाने में समर्थ होता है। अत: बुद्धि का प्रयोग सुविचारित होना चाहिए।

जीवन में एक बात का ध्यान अवश्य रखा जाए कि बुद्धि दूसरों के चलाए अनुसार नहीं चलानी चाहिए। उसमें प्रकाश पैदा करना चाहिए कि वह स्वयं सोचने में समर्थ बन सके। बालक जब तक पैरों पर खड़ा नहीं होता तब तक वह माता-पिता, भाई आदि की अंगुली पकड़कर चलता है किन्तु वह प्रयत्न करता है कि स्वयं के बल पर चले व चलने भी लगता है। वैसे ही बुद्धि में उस सामर्थ्य को प्रकट करना चाहिए जो अपना तंत्र अपने हाथ में रख सके।

फाल्गुन कृष्ण 12, रविवार, दिनांक : 06.03.2016 **साभार- आरोह** श्रमणोपासक

रुक्मिणी विवाह

शिशुपाल संग सगाई

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

29-30 जुलाई 2023 अंक से आगे....

सरसत भाट आगे बढ़ा। वह जैसे ही नगर से बाहर निकला, वैसे ही उसे हिंजड़े मिले। सरसत की दृष्टि में यह भी अपशकुन ही था, परन्तु उसकी विवशता ने लौटने न दिया। उसने यह भी विचार किया कि नगर में तो अच्छे-बुरे सभी लोग रहते हैं, इसलिए उनका सामने मिलना स्वाभाविक ही है, देखें अब मार्ग में कैसे शकुन होते हैं? वह चन्देरी के मार्ग पर आगे बढ़ा। सरसत वन के मार्ग में कुछ ही दूर गया था कि उसने अपनी बायीं ओर श्यामा, जिसे कोचरी या भैरवी भी कहते हैं, को बोलते देखा। सरसत ने इसे भयंकर अपशकुन माना और वह अपने मन में कहने लगा कि यह पक्षी इस कार्य का तीव्र विरोध कर रहा है और इस कार्य को करने से रोक रहा है। वह इस प्रकार विचार कर ही रहा था कि हिरण उसका मार्ग काट गए। सरसत सोचने लगा कि अब तो अपशकुन चरम सीमा के समीप पहुँच चुके हैं; परन्तु मैं क्या करूँ? मेरे लिए तो पुन: कुण्डिनपुर लौटकर जाना मृत्यु को बुलाना है। चाहे जैसे अपशकुन हों, मुझे तो चन्देरी जाना ही होगा। फिर जो दुष्परिणाम होगा, वह मूर्ख रुक्म के साथ हम सबको भी भुगतना ही पड़ेगा।

अपशकुनों का सामना करता हुआ सरसत चन्देरी पहुँचा। मार्ग में उसे अन्य किसी विघ्न का सामना नहीं करना पड़ा। हाँ, अपशकुनों के कारण उसको खेद अवश्य रहा। चन्देरी पहुँचकर वह जैसे ही नगर में प्रवेश करने लगा, वैसे ही उसे फिर अपशकुन हुए। सरसत ने अपने मन में कहा- अपशकुनों, तुम कितना ही विरोध करो, मुझे तो चन्देरीराज के यहाँ जाना ही होगा। यद्यपि तुमने कुण्डिनपुर और मार्ग में यह स्पष्ट कर दिया कि कुण्डिनपुर के लिए क्यों विपत्ति बुलाने जा रहे हो और अब यहाँ भी तुम यही कर रहे हो कि चन्देरी में सन्ताप क्यों लाए हो, परन्तु कुण्डिनपुर के लिए विपत्ति और चन्देरी के लिए सन्ताप मैं नहीं बुला रहा हूँ। मैं अपनी ओर से निर्दोष हूँ। जो कुछ भी कर रहा है वह मूर्ख रुक्म कर रहा है।

सरसत भाट राजमहल के द्वार पर पहुँचा। उसने द्वारपाल द्वारा शिशुपाल के पास बधाई भेजी और निवेदन कराया कि मैं सरसत भाट कुण्डिनपुर से वहाँ की राजकुमारी का टीका लेकर आपको चढ़ाने आया हूँ। द्वारपाल ने सरसत की कही हुई सब बातें शिशुपाल को जा सुनाई। शिशुपाल बहुत प्रसन्न हुआ। वह विचारने लगा कि कुण्डिनपुर के राजा भीम के एक ही कन्या है, जिसकी बहुत प्रशंसा सुनी है और जो रूप, गुण तथा लक्षणों से बहुत उत्तम मानी जाती है। उसके विवाह का टीका मेरे लिए आया है, इससे अधिक सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है? इस विवाह से मुझे सर्वोत्तम अर्धांगिनी प्राप्त होने के साथ ही रुक्म जैसे बलवान का अटल सहयोग भी प्राप्त होगा।

शिशुपाल ने द्वारपालों को आज्ञा दी कि वे सरसत भाट को स्वागतपूर्वक सभा में लावें। द्वारपालकों आदि ने दही, अक्षत आदि मंगल द्रव्य आगे करके सरसत भाट का स्वागत किया। सरसत भाट अपने मन में कहने लगा कि इस प्रकार मंगल द्रव्य बताकर कृत्रिम शुभ शकुन करने से

कुछ नहीं होता। शकुन-अपशकुन जो होने थे, वे तो पहले ही हो चुके। सरसत शिशुपाल के दरबार में उपस्थित हुआ। उसने शिशुपाल को आशीर्वाद दिया। शिशुपाल ने भी उसका सम्मान किया तथा उसे योग्य आसन दिया।

सरसत भाट से **शिशुपाल** पूछने लगा- कुण्डिनपुर में सब कुशल तो है? महाराज भीम और हमारे मित्र रुक्म तो प्रसन्न हैं?

सरसत- आपकी कृपा से अब तक तो सब आनन्द-मंगल है। रुक्मकुमार भी आपकी कुशलता चाहते हैं।

शिशुपाल- तुम्हारा आगमन किस अभिप्राय से हुआ?

सरसत- कुण्डिनपुर के महाराज भीम के एक कन्या है, जिसका नाम रुक्मिणी है। रुक्मिणी गुण और सौन्दर्य की तो खान ही हैं, परन्तु वे सुलक्षणा भी ऐसी हैं कि कुछ कहा नहीं जाता। विदर्भ देश उनके जन्म के पश्चात् दरिद्रता से मुक्ति पाकर धनवान हो गया है। राजपरिवार में भी सब प्रकार आनन्द-मंगल रहता है और महाराज भीम का कोष भी अक्षय बन गया है। इस प्रकार उसके सुलक्षणों के प्रताप से विदर्भ देश में नित्य प्रति आनन्द ही रहता है।

सरसत भाट से रुक्मिणी की प्रशंसा सुनकर शिशुपाल अपने मन में यह विचारता हुआ प्रसन्न हुआ कि ऐसी सुलक्षणा कन्या मेरी पत्नी बनेगी। उसने सरसत से कहा- हाँ, कुण्डिनपुर की राजकुमारी की मैंने भी ऐसी ही प्रशंसा सुनी है।

सरसत- राजकुमारी विवाह के योग्य हुई है। राजकुमारी के विवाह के विषय में विचार करने के लिए महाराज भीम ने एक सभा की, जिसमें राजकुमार, महामंत्री और राजपरिवार के लोग सम्मिलित हुए थे। महाराज ने राजकुमारी का विवाह कृष्ण के साथ करने का प्रस्ताव पेश किया। उन्होंने कृष्ण की अधिक प्रशंसा की। उसे इन्द्र से भी बड़ा बताया। उसके बचपन के पराक्रम का वर्णन किया। यह बताया कि उसने बाल लीला मात्र में ही पूतना राक्षसी को मार डाला। कालिया नाग को मार डाला, गोवर्धन पर्वत को अंगुली पर उठा लिया और कंस को मारकर उग्रसेन को पुन: राजा बनाया।

सरसत के मुख से कृष्ण की बड़ाई सुन-सुनकर शिशुपाल मन-ही-मन में जलने लगा। वह विचारने लगा कि यह भाट बड़ा ही धृष्ट है जो मेरे सामने कृष्ण की बड़ाई कर रहा है और मेरे सभासदों को इस प्रकार कृष्ण के पराक्रम से परिचित करा रहा है। इसे रोकना भी ठीक नहीं है, क्योंकि यही कृष्ण की बड़ाई अपनी ओर से नहीं कर रहा है, किन्तु राजा भीम ने इस प्रकार प्रशंसा की, यह बता रहा है।

शिशुपाल की मुखाकृति उसके हृदय के भाव बताने लगी। सरसत शिशुपाल की मुखाकृति देखकर ताड़ गया कि इसे कृष्ण की बड़ाई असह्य हो रही है। अब यदि मैंने बात नहीं पलटी तो कार्य बिगड़ जाएगा। इस प्रकार विचार कर सरसत ने बात बदल दी। वह आगे कहने लगा- इस प्रकार महाराज भीम ने तो कृष्ण की प्रशंसा की, परन्तु रुक्म ने कृष्ण का विरोध किया और आपकी प्रशंसा की। राजकुमार ने अपना पक्ष लेकर राजकुमारी का विवाह आपके साथ करने का प्रस्ताव किया। महाराज और राजकुमार में इस प्रकार मतभेद हो गया। अन्त में मंत्री की सहमति से राजकुमारी के विवाह का भार राजकुमार पर डालकर महाराज तटस्थ हो गए। राजकुमार को तो अपनी बहिन का विवाह आप ही से करना इष्ट था। इसलिए उन्होंने यह पत्र लिखकर दिया है और टीका तथा भेंट सामग्री भेजी है। आप इसे स्वीकार कीजिए। एक बात और है जो मैं निवेदन किए देता हूँ। रुक्म ने यह पत्र महाराज से छिपाकर लिखा है। उन्होंने यह भी कहा है कि आप साधारण बारात लेकर ही न चले आएँ।

सरसत ने शिशुपाल को रुक्म का पत्र देकर टीका तथा भेंट सामग्री उसके सामने रख दी और वह समस्त बात भी उसे सुना दी जो रुक्म ने उससे कहने के लिए कही थी। शिशुपाल रुक्म का पत्र पढ़कर सरसत से कहने लगा- ''महाराज भीम वृद्ध हो गए हैं। अब उनकी बुद्धि बराबर काम नहीं करती। इसी से उन्होंने उस ग्वाले की

प्रशंसा करके उससे अपनी कन्या का विवाह करने का विचार किया था। समझ में नहीं आता कि जो कृष्ण हमारे भय से समुद्र के किनारे भाग गया, जो नीच जाति का और गुणहीन है, उसे भीम ने अपनी कन्या देने का विचार कैसे किया था? यह तो अच्छा हुआ कि युवक और बुद्धिमान रुक्म ने अपनी बहिन का विवाह उसके साथ नहीं होने दिया अन्यथा हम क्षत्रियों के लिए बड़े कलंक की बात होती। यह क्षत्रिय राजकन्या नीच ग्वाले को दी जाए, इससे अधिक कलंक और लज्जा की बात दूसरी क्या हो सकती है? रुक्म विचारशील व्यक्ति हैं, वे सब बातों को जानते हैं। उनको क्षत्रियों की मान-प्रतिष्ठा का ध्यान है। मेरे मित्र होने के कारण वे क्षत्रियों के मान-सम्मान से परिचित हैं। मुझे भी रुक्म का ध्यान रहता हैं। मैं अपनी शक्तिभर उनका पक्ष कदापि नहीं गिरने दे सकता। मुझे अभी विवाह नहीं करना था, फिर भी मैं रुक्म की बात और क्षत्रिय के सम्मान की रक्षा के लिए यह टीका स्वीकार करता हूँ।''

शिशुपाल की बात सुनकर सरसत अपने मन में कहने लगा कि तुमने यह टीका स्वीकार तो किया है, परन्तु क्या ठीक है कि रुक्म की बात की रक्षा में तुम्हें अपना सम्मान भी खोना पड़े। उसने शिशुपाल से कहा कि रुक्म का विश्वास सही निकला। रुक्म को पहले से ही विश्वास था कि मेरी बात को चन्देरी नरेश व्यर्थ न जाने देंगे। रुक्म ने लग्न तिथि की शोध भी करा ली है। माघ कृष्ण अष्टमी लग्न के लिए निकली है। आप भी अपने ज्योतिषी से विश्वास कर लीजिए और इस तिथि की स्वीकृति दीजिए।

शिशुपाल– हाँ, ठीक है, शुभ काम में अनावश्यक विलम्ब हानिप्रद है।

शिशुपाल ने ज्योतिषी को बुलाने की आज्ञा दी। ज्योतिषी के आ जाने पर शिशुपाल ने उसे कुण्डिनपुर से आए हुए टीके की बात से परिचित किया और विवाह तिथि पर विचार करने के लिए कहा। ज्योतिषी ने सरसत से रुक्मिणी की जन्मकुण्डली लेकर उसे देखा। उसने रुक्मिणी और शिशुपाल की जन्मकुण्डली आपस में मिलाकर तथा कुछ विचार कर नकारात्मक रूप से सिर हिलाया। शिशुपाल विचारने लगा कि ज्योतिषी कैसा मूर्ख है, जो सभी के मध्य इस प्रकार सिर हिलाया है। उसने ज्योतिषी से पूछा कि क्या रुक्म की भेजी हुई विवाह तिथि ठीक नहीं है?

ज्योतिषी– तिथि के ठीक होने का प्रश्न तो बाद में है, पहले तो विवाह ही ठीक नहीं हैं। मैंने अनेक जन्मकुण्डलियाँ देखी हैं, परन्तु इस कन्या की ग्रहदशा जैसी ग्रहदशा दूसरी जन्मकुण्डली में नहीं देखी। ग्रहदशा देखते हुए इस कन्या की समानता करने वाली दूसरी कन्या संसार में है ही नहीं। यह कन्या शरीरधारिणी शक्ति ही मालूम होती हैं। मैंने बहुत-बहुत विचार किया, परन्तु इस कन्या का विवाह योग आपके साथ बनता ही नहीं है। आज मैं आपके क्रोध से भय खाकर अपनी आजीविका की रक्षा के लिए स्पष्ट बात न कहूँ, तो जब कोई अनिष्ट परिणाम होगा, आप मुझे और मेरी ज्योतिष विद्या को धिक्कार देंगे। इसलिए मैं अभी ही सच्ची बात कह देता हूँ कि इस कन्या के योग्य आप नहीं हैं। इस कन्या का विवाह आपके साथ कदापि नहीं हो सकता। इसका विवाह तो किसी असाधारण पुरुष के साथ होगा। यदि आप मेरी बात न मानकर इस कन्या के साथ विवाह करने के लिए गए तो आपको अपमानित होकर खाली हाथ लौटना पड़ेगा। इसलिए इसी में कुशलता है कि आप यह विवाह प्रस्ताव स्वीकार ही न करें। यह कहकर टीका वापिस कर दें कि हमारे ज्योतिषी ने इस विवाह को ठीक नहीं बताया। ऐसा करने से आप भविष्य में अपमानित और कलंकित होने से बच जाएँगे।

ज्योतिषी की बात सुनकर सरसत अपने मन में कहने लगा कि यह ज्योतिषी बिल्कुल ठीक कहता है। जो बात मार्ग में अपशकुनों ने और कुण्डिनपुर के ज्योतिषी ने कही, वही यह भी कहता है। सरसत तो अपने मन में इस प्रकार विचार कर रहा था, लेकिन शिशुपाल के बदन में ज्योतिषी की बातों से आग-सी

जल रही थी। ज्योतिषी की बात समाप्त होते ही शिशुपाल उससे कहने लगा कि तुम निरे मूर्ख ही जान पड़ते हो। कुण्डिनपुर की राजकुमारी यदि असाधारण पुरुष को विवाही जाएगी, तो मैं क्या साधारण पुरुष हूँ? फिर कैसे कह रहे हो कि टीका लौटा दो? जान पड़ता है तुम्हें किसी ने बहकाया है। इसलिए तुम टीका लौटा देने को कह रहे हो। हम समर्थ हैं। हमारे सामने ज्योतिष या ज्योतिषी का बल नहीं चल सकता। हम तो केवल प्रथा पालन के लिए इस प्रकार पूछ लिया करते हैं। समर्थ को किसी भी समय और किसी कार्य में दोष नहीं होता। पुण्य-पाप या अच्छा-बुरा साधारण लोगों के लिए है, हमारे लिए नहीं। हम यदि तुम लोगों के कहने को मान ही लिया करें तो राजस्व से भी हाथ धो बैठें। जिस समय हमारी तलवार म्यान से बाहर होती है, उस समय ज्योतिष या पुण्य-पाप न मालूम कहाँ जा छिपते हैं? हमारी शक्ति के सामने इनका पता नहीं रहता। हमारे कार्य शक्ति के आधार से हुआ करते हैं, न कि ज्योतिष के आधार से। इसलिए तुम लोग अपने घर जाओ, हमें तुमसे अधिक कुछ नहीं पूछना है और देखो, तुम राजसभा में बातचीत करने की योग्यता नहीं रखते, न ही सभ्यता जानते हो। इसलिए तुम्हारा 'राजज्योतिषी' पद आज से नहीं रहेगा और न जागीर आदि ही रहेगी।

अहंकारी लोग अपनी बात के विरोध में कोई बात सुन व सह नहीं सकते। वे विरोधी बात का समाधान करने के बदले अपनी सत्ता के बल पर विरोधी बात करने वाले को दबाने लगते हैं और कभी-कभी उसका भयंकर अहित भी कर डालते हैं। यह नहीं देखते कि सत्य और न्याय किसमें है? उनके समीप वही सत्य और वही न्याय है जो उन्हें प्रिय है और जो-कुछ वे कहते हैं। ज्योतिषी की बात पर शिशुपाल को विचार करना चाहिए था। यह देखना चाहिए था कि इनके कथन में कितना तथ्य है, परन्तु उसने ऐसा न करके अपने क्रोधी और अहंकारी स्वभाव का ही परिचय दिया।

ज्योतिषी भी सत्य भक्त था। उसने विचारा कि सच्ची बात कहने से आज अहित होता है और झूठी बात कहने से कुछ दिन बाद अहित होगा। आज सत्य के लिए जो अहित हो रहा है, उसके लिए तो यह आशा भी की जा सकती है कि वह कभी हित में परिणत हो जाए, परन्तु झूठी बात कहने पर जो अहित होगा उसकी पूर्ति की तो आशा नहीं की जा सकती। इसलिए आज जो अहित हो रहा है, वह भले ही हो, लेकिन झूठ बात तो नहीं कहूँगा। झूठ बात कहने से राजा की हानि तो होगी ही, साथ ही मेरी भी हानि होगी और सच्ची बात कहने पर राजा की हानि तभी होगी जब यह सच्ची बात को न माने, परन्तु जब इसे बात की सच्चाई मालूम होगी तब यह स्वयं उस सच्ची बात को न मानने के लिए पश्चात्ताप करेगा और इस समय जो मेरा अहित कर रहा है, उसकी पूर्ति करेगा। अभी यह अहंकार के अधीन है। इस समय इससे कुछ कहना व्यर्थ है। इस प्रकार विचार कर ज्योतिषी यह कहता हुआ चला गया कि मैं तो आपके कल्याण की ही कामना करूँगा। आप चाहे मेरी बात मानें या न मानें। मैं कहूँगा सत्य और आपके हित की बात।

ज्योतिषी के चले जाने पर शिशुपाल ने सरसत से कहा कि विवाह तिथि आदि के विषय में अब विशेष विचार करने की आवश्यकता नहीं है। रुक्मकुमार ने जो तिथि निकलवाकर भेजी है, वह हमें भी स्वीकार है। रुक्म कुमार गलत तिथि क्यों भेजेंगे? विवाह तो उनकी बहिन का ही है न!

सरसत- आपने यह बड़ी अच्छी बात कही। एक जगह लग्न निकल ही चुका है। अब इस विषय पर विशेष विचार करवाने से अनुकूल-प्रतिकूल दोनों ही प्रकार की बात सुननी पड़ती है।

शिशुपाल ने अपने दरबारियों को टीका स्वीकार होने की खुशी मनाने की आज्ञा दी। दरबार में केसर, गुलाल उड़ने लगे और उत्सव होने लगा।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

-क्रमशः श्रमणोपासक

श्रमणोपासक हैडलाइन्स

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

❈ परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में नीमच में चतुर्विध संघ की साक्षी में चातुर्मास का उत्साह चरम पर।

❈ तपस्याओं का लगा अम्बार। अब तक 32 मासखमण, 200 लोच सहित अठाई, तेला, उपवास, पौषध, संवर की तपस्या। जैन-जैनेतर सभी धर्म के रंग में तल्लीन।

❈ पर्वाधिराज पर्युषण का शानदार आगाज- 151 अठाईयाँ, 500 पौषध, हजारों सामायिक, लगातार आठ दिनों तक चलने वाला 24 घण्टे अखण्ड नवकार महामंत्र जाप के साथ बेला, तेला, उपवास, एकासन, आयंबिल, दया, सामायिक, संवर आदि का लगा ठाठ। सम्पूर्ण नीमच धर्ममय हुआ।

❈ धर्मपाल भाई-बहिनों ने भी आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य का लाभ लेकर जीवन उन्नयन हेतु मार्गदर्शन प्राप्त किया।

❈ नवदीक्षित संत श्री उत्साह मुनि जी म.सा. का 32 दिवसीय संथारा सहित पण्डितमरण। आचार्य प्रवर के सान्निध्य में चार-चार लोगस्स के ध्यान सहित संथारा साधक श्री उत्साह मुनि जी म.सा. को श्रद्धांजलि अर्पित।

❈ प्रोफेशनल फोरम ग्रुप के दो दिवसीय शिविर में देशभर से विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने उपस्थित हो संघ सेवा का संकल्प लिया।

❈ निम्बाहेड़ा से गुरुभक्तों के जत्थे ने 30 किमी. पैदल यात्रा कर गुरुचरणों में उपस्थित हो विनती प्रस्तुत की।

❈ मात्र 33 वर्ष की आयु में युवारत्न स्वाध्यायी राकेश जी नेहा जी बोहरा, अक्कलकुआ ने आचार्य भगवन् के श्रीमुख से आजीवन शीलव्रत का प्रत्याख्यान लेकर आदर्श उपस्थित किया।

❈ नीमच संघ, महिला समिति, युवा संघ एवं बहु मण्डल सहित नीमच का कण-कण इस चातुर्मास को ऐतिहासिक बनाने हेतु दृढ़ संकल्पित।

श्रमणोपासक

तप, संयम व गुणों के भण्डार। राम गुरु की जय-जयकार।।
जहाँ राम गुरु की महर है। वहाँ धर्म, तप की लहर है।।

युगनिर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में धर्मनगरी नीमच में बह रही धर्म की निर्मल धारा; साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. के मासखमण पूर्ण एवं साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. व साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा. मासखमण तप की ओर अग्रसर; अन्य कई दीर्घ तपस्याएँ जारी

- धर्म श्रद्धा से आत्मबल मजबूत होता है
  -आचार्य श्री रामेश
- ममत्व त्याग से समत्व की प्राप्ति होती है
  -उपाध्याय प्रवर

जैन स्थानक एवं राठौर परिसर, नीमच।

युगनिर्माता राम गुरु हुए अवतारी,
उत्तम पुरुषों की बात है न्यारी।
शुद्धाचार का बिगुल बजाया,
चौथे आरे की झलक दिखलाई।।

जन-जन में नैतिकता, सदाचार, ईमानदारी, सच्चाई, व्यसनमुक्ति व संस्कार जागरण की अलख जगाने वाले युगनिर्माता, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-8 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि ठाणा-45 के पावन सान्निध्य में साधना महोत्सव चातुर्मास में धर्म की निर्मल धारा अविरल प्रवाहित हो रही है। नित नए कीर्तिमानों एवं उपलब्धियों के साथ धर्माराधना निरन्तर गतिमान है। अब तक 32 मासखमण एवं 200 लोच के साथ तेले, अठाई, उपवास, पौषध, संवर आदि में जैन-जैनेतर सभी धर्म के रंग में रंगे हुए हैं। आगे कई तपस्याएँ जारी हैं। प्रतिदिन प्रार्थना के समय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर

सहित नीमच में विराजित सभी संत महापुरुषों के पावन दर्शन का लाभ गुरुभक्तों को सहज ही मिल रहा है। जीवन निर्माणकारी प्रवचनों से जनता अभिभूत हो रही है। तत्त्वज्ञान शिविरों की शृंखला चल रही है। देश-विदेश से आगत धर्मप्रेमी श्रद्धालु आराध्यदेव का पावन सान्निध्य प्राप्त कर जीवन धन्य बना रहे हैं।

32 मासखमण तप में से 6 चारित्रात्माओं के, 15 स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं के एवं 11 बाहर से पधारे श्रावक-श्राविकाओं के प्रत्याख्यान आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से हो चुके हैं। '**लोच में क्या सोच**' कार्यक्रम में 200 कायक्लेश तप (लोच) हो चुके हैं। छोटे-बड़े सभी धर्म तप में लीन हैं। उभय गुरु-भगवन्तों की कृपा से साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा. मासखमण की दीर्घ तपस्या की ओर अग्रसर हैं। अनेक चारित्रात्माओं व श्रावक-श्राविकाओं के गुप्त तपस्याएँ जारी हैं। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के अवसर पर एक साथ 151 से अधिक अठाईयाँ एवं तेला, बेला, उपवास, एकासन, आयंबिल, दया, सामायिक, संवर, अखण्ड नवकार महामंत्र जाप एवं धार्मिक परीक्षाएँ, प्रश्नपत्र एवं अन्य धार्मिक क्रियाओं से अपूर्व धर्मोल्लास का वातावरण बना हुआ है। नीमच के श्री साधुमार्गी जैन संघ, महिला मण्डल, समता युवा संघ एवं बहू मण्डल की सेवाएँ सराहनीय हैं।

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय

01 अगस्त 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना से सम्पूर्ण वातावरण धर्ममय बन गया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धार्मिक तत्त्वज्ञान कक्षा में धर्मबोध प्रदान किया।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''***धर्म को प्राण-हृदय में उतार लिया, मन में श्रद्धा गहरी जम गई तो दानव, यक्ष, किन्नर, पिशाच आदि कोई भी हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। कठिनाइयाँ आ सकती हैं, परीक्षाएँ हो सकती हैं। ये कठिनाइयाँ एवं परीक्षाएँ भी यह जानने के लिए होती हैं कि हमारी धर्म श्रद्धा कितनी मजबूत हैं। समस्याएँ, परेशानियाँ आने पर हम अपने आप को सहनशील बनाने में समर्थ बनें। तीर्थंकर महापुरुषों की स्तुति करने से ज्ञान, दर्शन और चारित्र का बोधिलाभ होता है। ज्ञान-दर्शन की आराधना करने में व्यक्ति समर्थ बनेगा तो अपने चारित्र को पवित्र बनाए रखने के लिए उसमें सामर्थ्य पैदा होगा। भगवान महावीर के जीवन में भी कई प्रतिकूल परिस्थितियाँ आईं, पर उन्होंने कभी किसी का प्रतिकार नहीं किया अपितु वे अपना कार्य करते रहे। भगवान महावीर अपने आप में स्थित रहे। 'जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय' इस सूत्र को भगवान महावीर ने हृदय में धारण कर लिया। मेरी आत्मा शाश्वत है। मेरी आत्मा पर कोई भी आक्रमण करने में समर्थ नहीं है। मन, वचन, काया से हम जैसा बीज बोएँगे वैसा ही हमें फल मिलेगा।***'' आचार्य भगवन् ने सुनंदा चारित्र भाग की सुन्दर एवं सरस व्याख्या की।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिसने अपनी आत्मा को नियंत्रित कर लिया वो इहलोक और परलोक में सुखी हो जाएगा। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ***''इण कलयुग रा भाग्यविधाता, राम सब रा कष्ट मिटाता''*** गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया।

देशभर के अनेक स्थानों से प्रत्येक पूर्णिमा को आचार्यदेव के पावन दर्शनों का लाभ लेने वाले गुरुभक्त श्रीचरणों में उपस्थित हुए। पक्खी पर्व होने से सामायिक, एकासन, उपवास, पौषध, दया, संवर आदि प्रचुर संख्या में हुए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा समाधान आदि हुए।

तन जावे तो जावे सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए

02 अगस्त 2023। दिन का शुभारंभ प्रात: मंगलमय प्रार्थना से हुआ। तत्पश्चात् आयोजित विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में धर्मसभा में शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**अब तक हमने जितना भी समय लगाया है वह शरीर के लिए या परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए लगाया होगा, पर आत्मा के लिए कितना समय लगाया है? जो समय आत्मा के लिए लगेगा, वास्तव में वही समय सार्थक होगा। शरीर, परिवार आदि के लिए अनन्त जन्मों में हमने बहुत समय लगाया है। हमने केवल कर्मों का सृजन किया है। कुछ एक परोपकार के काम हमने किये होंगे। पुण्य या दान उसे कहा गया है जिसमें अपना अस्तित्व गौण हो जाता है अर्थात् यह मेरी वस्तु है, ये मैंने बनाई है आदि भाव समाप्त हो जाते हैं। वास्तव में वही दान-पुण्य है। तन जावे तो जावे, पर सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए। धर्म श्रद्धा को हृदय में धारण करो तो कैसा भी संकट आ जाए, कैसी भी समस्या आ जाए, हमारी नैया पार लगेगी। जैसे कामदेव श्रावक धर्म पर अडिग रहे।**'' आचार्यदेव सुनन्दा चारित्र भाग से नित नई प्रेरणाएँ प्रदान कर रहे हैं।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धन व भौतिक वस्तुएँ कभी साथ देने वाली नहीं हैं और धर्म व अध्यात्म कभी साथ छोड़ने वाले नहीं हैं। हमें सच्चे देव, गुरु, धर्म की शरण में जाना चाहिए। साध्वीवृन्द ने ***''राम गुरु को ध्याओ, भवों से पार कर देंगे''*** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। धर्मपाल भाई-बहिन दर्शनार्थ उपस्थित हुए। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

03 अगस्त 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना हुई। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में विशेष मार्गदर्शन दिया। राठौर परिसर में आयोजित विशाल धर्मसभा को धर्म का मर्म बताते हुए साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**श्रावक धन में जीता जरूर है किन्तु उसका मन धन में नहीं लगता है, वह धर्म करता है। धन का अम्बार लगने के बावजूद श्रावक निर्लिप्त भाव में रह रहा है तो यह श्रावक की भूमिका है। चारों तरफ धन होने के बावजूद भी वह अपने ऊपर बरसाती लगा लेता है, जिससे मोह-ममत्त्व का पानी उसके भीतर प्रवेश नहीं कर पाता। उस भूमिका पर आरूढ़ होने वाले की तमन्ना शीघ्र ही मुनि जीवन स्वीकार करने की होती है। अत: *'अंत समय आलोयना करूँ, करूँ संथारो साथ'*। वह चाहता है कि जीवन की सांध्य बेला में आत्मशुद्धि पूर्वक संलेखना को प्राप्त करूँ, राग-द्वेष को पतला करूँ। उसकी अन्य कोई चाह नहीं होती। वह चाहता है कि मैं तृप्त हो जाऊँ। ऐसी तृप्ति वाला जन्म-मरण को रोक देता है।**''

संथारा साधक श्री उत्साह मुनि जी म.सा. को श्रद्धांजलि अर्पित

फूल के मुरझाने पर भी खुशबू रह जाती है।
व्यक्ति के चले जाने पर स्मृति शेष रह जाती है।

''**धामणगाँव रेलवे विदर्भ महाराष्ट्र के सुश्रावक श्री शान्तिलाल जी छाजेड़ के मन में विचार आया कि अब मुझे संसार से निवृत्त हो जाना चाहिए। उन्हें संतों से प्रेरणा मिली और उन्होंने साधु जीवन व संथारा स्वीकार किया। परिवार वालों ने भी अन्तराय नहीं दी। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. एवं श्री अनन्य मुनि जी म.सा. ने अम्लान भाव से सेवा कार्य को स्वीकार किया और 32 दिनों तक संथारा संलेखना की आराधना करते हुए श्री उत्साह मुनि जी म.सा. ने उत्साहपूर्वक समाधिमरण को स्वीकार किया। ऐसे प्रसंगों से प्रेरणा लें कि मेरे जीवन में भी तीनों मनोरथ पूर्ण हो जाएँ। जीवन में तृप्ति प्राप्त कर लेने पर ही यह कार्य संभव है।**''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य के अन्दर अनंत शक्तियाँ हैं। वह सब कुछ कर सकता है। आत्मा से महात्मा, महात्मा से परमात्मा बन सकता है। इस शरीर से अशरीरी बनने की साधना की जा सकती है।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आरंभ-परिग्रह को छोड़ना कठिन है, लेकिन भाव संयोग को छोड़ना तो बहुत ही कठिन है। एक क्षणभर का साधु जीवन भी महत्त्वपूर्ण है। श्री उत्साह मुनि जी म.सा. ने तीनों मनोरथ सिद्ध कर लिये।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मन के अन्दर जो बात गहरी जम जाती है वह प्रभाव डालती है। प्रतिदिन अन्तर हृदय से धर्म करना चाहिए। मन को समाधि में लगाकर देह छोड़ूँ, ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए।

साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि व्यक्ति का व्यक्तित्व ही सफलता एवं असफलता की पहचान है। परमार्थ से स्वार्थ एवं ममत्व नहीं होता। ऐसे महान परमार्थी आचार्य भगवन् ने श्री उत्साह मुनि जी म.सा. को दीक्षा व संथारे की आज्ञा प्रदान कर महान उपकार किया है। संतों ने सेवा का आदर्श उपस्थित किया। हम भी अनासक्त बनकर निवृत्ति मार्ग पर आगे बढ़ें।

संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने श्री उत्साह मुनि जी म.सा. का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। चार-चार लोगस्स का ध्यान कर सम्पूर्ण सभा ने श्रद्धांजलि अर्पित की। तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

समता बहू मण्डल, चित्तौड़गढ़ ने वर्ष में 200 सामायिक करने का नियम लिया। नीतू बाई कोटेचा, के.जी.एफ. के निधन पर खिमेसरा परिवार, बाबरा ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति व संदेश प्राप्त किया।

जो करना सो अच्छा करना, फिर दुनिया में किससे डरना

04 अगस्त 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना पश्चात् धार्मिक कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्मतत्त्व का बोध कराया। अपार जनमेदिनी से परिपूरित धर्मसभा में गुरुभक्तों को सम्बोधित करते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''***धर्म में जितनी गहरी श्रद्धा होगी उतना ही प्रतिलाभ मिलेगा। निर्भय होकर जो कथन कहा जाएगा वो सही कथन हो। यह सत्य कथन निर्भयता दिलाने वाला हो जाता है। जो करना अच्छा करना, फिर दुनिया में किससे डरना? धर्म श्रद्धा से नित्य चमत्कार होते रहेंगे। चमत्कार को ही मत देखो, धर्म दृढ़ता को देखो। धर्म श्रद्धा अटल होनी चाहिए। सीता की श्रद्धा-भक्ति एकनिष्ठ थी। उसके पास शील का तेज था, जिस कारण अग्नि भी शीतल हो गई। जहाँ कथनी-करनी में फर्क नहीं रहता, मन, वचन, काया व भाव की सच्चाई रहती है, वहाँ देव-दानव के उपसर्ग भी दूर हो जाते हैं और कठिन से कठिन क्षणों में भी व्यक्ति उत्तीर्ण हो जाता है। जैसी सीता की बात है वैसी ही सेठ सुदर्शन की बात है।***'' आपश्री जी ने सुनंदा चारित्र भाग की सरस व्याख्या फरमाई।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि शरीर की सफाई, कपड़ों की सफाई की हमें चिन्ता रहती है, पर आत्मा की सफाई की कोई चिन्ता नहीं है। मनुष्य भव की यात्रा कर्मों को नष्ट करने के लिए है।

आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने ''***गुरुवर पधारो, हृदय में विराजो***'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। उपाध्याय प्रवर की पावन प्रेरणा से संघ मंत्री ने पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर सामूहिक अठाई करने का आह्वान किया। तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए। सभा में उपस्थित हजारों भाई-बहिनों ने घर में 10 मिनट नवकार महामंत्र का जाप करने का संकल्प लिया। संकल्प सूत्र शिविर में साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा. ने साधुमार्गी आस्था संकल्प की समझाइश देते हुए सच्चे देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने की प्रेरणा दी। जिला इंजीनियर्स एसोसिएशन के पदाधिकारियों व सदस्यों ने गुरुदर्शन-सेवा व प्रवचन श्रवण का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है

05 अगस्त 2023। सूर्योदय के पश्चात् प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना से आज के दिवस के शुभारंभ के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन एवं जैन सिद्धान्त बत्तीसी का गहन अभ्यास जिज्ञासु जनों को कराया।

राठौर परिसर में धर्मसभा का नयनाभिराम दृश्य देखकर हर कोई आत्मतृप्त हो रहा था। विशाल धर्मसभा में चतुर्विध संघ को सम्बोधित करते हुए प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''***धर्म की आराधना भावों से नहीं होगी तो आराधना का आनन्द नहीं आ पाएगा। अनेक बार धर्माराधना करने के बाद भी हम संसार में रुके हुए हैं। कठिनाई के समय में भी अटल रहने का अभ्यास करना चाहिए। मृगावती जी महावीर में इतनी तल्लीन थी कि उसे अन्तर्मन से प्रीत लग गई। श्रीमती की धर्म-श्रद्धा मजबूत थी। कोई भी कार्य नवकार महामंत्र के उच्चारण के बिना नहीं करना। उसी धर्म-श्रद्धा के परिणामस्वरूप सर्प भी फूलमाला बन गया। जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म उधार का काम नहीं नगद का है। सामायिक करेंगे तो तत्काल लाभ मिलेगा, शान्ति-समाधि मिलेगी।***''

सभा में उपस्थित लोगों ने कोई भी कार्य करने से पूर्व '**नमो अरिहंताणं**' एवं कार्य पूर्ण होने के बाद '**नमो सिद्धाणं**' बोलने का संकल्प लिया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार के प्रति आसक्ति रह गई तो जन्म-मरण का चक्र चलता रहेगा।

प्रोफेशनल फोरम ग्रुप के दो दिवसीय शिविर के आगाज में राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, पदाधिकारियों एवं शिविर प्रतिभागियों ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत कर सबको भाव विभोर कर दिया। दो दिवसीय युवती शक्ति शिविर का भी शुभारंभ हुआ।

साधुमार्गी समता संघ, इन्दौर ने वर्ष 2024 के चातुर्मास हेतु गुरुचरणों में पुरजोर विनती प्रस्तुत की। संकल्प सूत्र शिविर में साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा. ने साधुमार्गी वंदन संकल्प, साधुमार्गी प्रतिलाभ संकल्प का सुन्दर विवेचन किया।

पूर्व शिक्षा आयुक्त राजस्थान सरकार प्रदीप जी बोरड़, जयपुर एवं अबू धाबी साधुमार्गी महिला संघ प्रमुख स्वाति जी साँखला ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

धर्म-श्रद्धा से मजबूत होता है आत्मबल

06 अगस्त 2023। आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रदत्त रविवारीय समता शाखा प्रकल्प के अन्तर्गत समता आराधना में सभी आयु वर्ग का अपूर्व उत्साह देखने को मिला। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करते हुए उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं को मंगलपाठ प्रदान किया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया।

विशाल धर्मसभा में उपस्थित ज्ञानपिपासु चतुर्विध संघ को सम्बोधित करते हुए साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''***धर्म-श्रद्धा को जिसने अपने प्राणों के साथ मिला लिया वह सदा जय को प्राप्त करता है। धर्म-श्रद्धा से आत्मबल मजबूत होता है। धर्म-श्रद्धा से सद्गति प्राप्त होती है। धर्म-श्रद्धा हमारी दुर्गति दूर करने वाली होती है। महासती मदनरेखा का जीवन दर्शाता है कि प्रगाढ़ धर्म-श्रद्धा के आधार पर विकट क्षणों में भी उसने हिम्मत नहीं हारी। सत्य, ईमान से जीने वाले निडर होते हैं। मदनरेखा को शील-धर्म सुरक्षा के लिए कई संकट उठाने पड़े। निर्भयता संकटों को दूर करने***

वाली होती है। धर्म के साथ जिसकी निष्ठा होगी, निर्भयता उसी को प्राप्त होगी। धर्म पर श्रद्धा रखना वीरों का काम है। धर्म रग-रग में समा जाना चाहिए। धर्म-श्रद्धा में कोई सुराख नहीं होना चाहिए।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि ''**गुरु कहते हैं दु:खों से मुक्त होना कठिन नहीं है। भ्रम, धुंधलापन, अस्पष्टता दु:ख पैदा करने वाले हैं। जैसे ही व्यक्ति भ्रम से दूर होगा वह दु:खों से मुक्त हो जाएगा। जो धर्म में स्थिर है उसे कोई विचलित नहीं कर सकता। हमारा मन सब कुछ बनने की अभिलाषा लेकर गतिशील हो तो सुखी बनने का सरल उपाय है सब कुछ बनने की इच्छा को छोड़ना। हमारा मन दुविधा के आकर्षण में आकर नई विचारणा करने लग जाता है। वर्तमान से मन विचलित होने लगता है। यही भ्रम दु:खों का कारण है। भरोसा सुख है, भ्रम दु:ख है। हम भ्रम से हटें और भरोसे से जीएँ।**''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम किसी के हैं और कोई हमारा है, यह हमारा भ्रम है। जब तक साँसें टिकी हैं, सब हमारे हैं। मरने के बाद कोई साथ जाने वाला नहीं है। सब स्वार्थ का संसार है।

समता महिला मंडल, दुर्ग एवं समता संघ, इन्दौर ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये। मालवा, मेवाड़ सहित देश के अनेक स्थानों के हजारों श्रद्धालु आराध्यदेव के दर्शनार्थ उमड़ पड़े। प्रवचन पाण्डाल भी छोटा प्रतीत होने लगा।

निम्बाहेड़ा से नीमच तक की 30 कि.मी. पैदल यात्रा कर सैकड़ों भाई-बहिनों ने महापुरुषों के चरणों में उपस्थित होकर विनती प्रस्तुत की। प्रोफेशनल शिविर एवं युवती शक्ति शिविर में धर्ममय एवं बेहतर जीवन जीने की कला महापुरुषों के सान्निध्य में प्राप्त हुई। संकल्प सूत्र शिविर में साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा. ने साधुमार्गी प्रवचन संकल्प की विशेष व्याख्या फरमाई। प्रतिदिन प्रतिक्रमण के पश्चात् नवयुवकों की ज्ञानचर्चा में उपस्थिति देखते ही बनती है। विभिन्न क्षेत्रों में गुरुचरणों में विनतियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं।

गुरु बनाए नहीं जाते, गुरु तो बन जाते हैं

07 अगस्त 2023। प्रात: प्रभु भक्ति से ओत-प्रोत मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने असीम कृपा कर मंगलपाठ प्रदान किया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्मतत्त्व की कक्षा ली।

खचाखच भरे प्रवचन पाण्डाल में उपस्थित धर्मनिष्ठ जनता को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपने ओजस्वी प्रवचन में फरमाया कि ''**गुरु बनाए नहीं जाते, गुरु तो बन जाते हैं। श्रद्धा को पैदा करने की जरूरत नहीं। श्रद्धा अपने आप पैदा होती है। हमारी भावनाएँ गुणों के प्रति अहोभाव पैदा करती है। प्रकृति नहीं कहती कि मेरी तारीफ करो, मुझे देखो। हम स्वत: ही उसकी ओर आकर्षित होते हैं। वंदन करने से गुरु से निकलने वाली ऊर्जा हमें प्राप्त होती है। हम समझें या नहीं, पर उसका प्रभाव हमारे पर पड़ता ही है। मुनि का संयम जीवन ही सौन्दर्य है। भारतीय संस्कृति वंदना-नमस्कार की संस्कृति है। हमारी हर मुद्रा का कोई ना कोई परिणाम व प्रभाव है। वन्दन, विनम्रता व लघुता के भाव पैदा करता है। वंदन से भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित होते हैं। पहली बार पूछना जानने के लिए होता है। दूसरी बात पूछना परीक्षा के लिए होता है। पूछने के बहुत से कारण हैं। बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। ममत्व को त्यागने वाला ही समत्व को प्राप्त कर सकता है।**''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब हम किसी को जीवन नहीं दे सकते तो हमें किसी का जीवन लेने का अधिकार नहीं है। एक भी जीव ऐसा नहीं जो हमारे बिना न चल सके, लेकिन हम इनके बिना नहीं रह सकते। हम अनावश्यक हिंसा से बचें।

साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा. आदि ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किये। सभा में उपस्थित कई भाई-बहिनों ने एक घण्टा मौन रहने, वर्ष में 12 आयंबिल करने सहित विभिन्न संकल्प ग्रहण किये।

संकल्प सूत्र शिविर में साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा. ने साधुमार्गी ज्ञानार्जन संकल्प का विवेचन प्रस्तुत करते हुए प्रतिदिन 15 मिनट धार्मिक ज्ञानार्जन करने व धार्मिक पुस्तक पढ़ने की प्रेरणा दी।

सभी समस्याओं का समाधान है धैर्य

08 अगस्त 2023। प्रात: मंगल प्रार्थना में ***''मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान''*** वंदना गीत के स्वर प्रस्फुटित हुए। सामायिक, प्रतिक्रमण एवं जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन दिया।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म-श्रद्धा का विकास साधु-सन्तों के निरन्तर सम्पर्क से होता है। धर्म-श्रद्धा दृढ़ रहती है और साधु-सन्तों का सान्निध्य मिलता है तो तनाव दूर होता है। बोलने से ज्यादा ताकत मौन में है। वैर की गांठ भव-भव को बिगाड़ देती है। कभी किसी का बुरा मत सोचो। परिस्थिति कैसी भी हो, सदा धैर्य धारण करना चाहिए। कार्य की सफलता धैर्यता से होगी। धैर्य जीवन की आन है। अपमान को अपमान से नहीं प्रेम से जीता जा सकता है। धैर्य की सदैव जीत होती है। धैर्य सदैव अखण्ड रखें। सारी समस्याओं का समाधान धैर्य में है। धीरज का फल मीठा होता है।**''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जहाँ अनेक हैं, वहाँ दु:ख है। जहाँ एक हैं, वहाँ सुख हैं। संयोग का वियोग निश्चित है। धन-सम्पत्ति, परिवार सब एक दिन छोड़ना पड़ेगा।

गुरुकृपा से साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. के मासखमण (30) तप के प्रत्याख्यान होने पर सम्पूर्ण सभा केसरिया-केसरिया गीतों से गूँज उठी।

श्रावक से साधु बनना जीवन की क्रान्ति है

09 अगस्त 2023। मंगलमय प्रात:कालीन प्रार्थना के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. दशवैकालिक सूत्र की विभिन्न गाथाओं एवं जैन सिद्धान्त बत्तीसी की सुन्दर व्याख्या फरमाई। राठौर परिसर स्थित प्रवचन स्थल पर उपस्थित गुरुभक्तों के अपार जनसमूह को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धार्मिक व्यक्ति कभी दूसरों को दोष नहीं देता है। वह सारा दोष अपने कर्मों का मानता है। मन पवित्र होता है तो आगे की बात भाँप ली जाती है। कठिनाई आए तो सारा दोष मेरा है। आत्महत्या समस्या का समाधान नहीं है। संकट में धैर्यता सफलता को प्राप्त करना है। धर्म-श्रद्धा वाला कभी किसी को दोष नहीं देता है। मेरे कर्मों का फल मुझे मिल रहा है। आत्मा ही कर्ता है और आत्मा ही भोक्ता है। जिसकी माता दु:खी हो उस संतान के लिए कलंक की बात है। आज का दिवस क्रांति का दिवस है। हम भी अपने दायित्व एवं कर्त्तव्य पालन में डटे रहें। माँ के दिल में दर्द और आँखों में आँसू हैं तो समझ लो कि आप दुनिया के सबसे गरीब व्यक्ति हैं। श्रावक से साधु बनना जीवन की क्रान्ति है। यतना ही धर्म का सार है। साधक प्रवचन माता का उपहास ना करें। मन, वचन, काया से साधुत्व की रक्षा करें।**

लोकैषणा से कल्याण होने वाला नहीं है। एक मूर्ख मित्र की बजाय सौ बुद्धिमान शत्रु भले। आज साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. के 31 उपवास पूर्ण होने जा रहे हैं। तपस्या करके आपने अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया है। हमें भी अनाहारक बनने की दिशा में आगे बढ़ना है।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य भव महान लक्ष्य प्राप्ति के लिए मिला है। हमारे अन्दर अनन्त शक्ति है। जरूरत है उस शक्ति को प्रकट करने की। धर्म पुरुषार्थ से ही मोक्ष की प्राप्ति होगी।

साध्वी श्री चन्दना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु ही प्राण हैं। उनसे सही मार्गदर्शन प्राप्त होता है। जो गुरु की आज्ञा में नहीं चलता वह भटकता है। साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. गुरु आज्ञा को शिरोधार्य कर दीर्घ तपस्या में आगे बढ़ गये।

साध्वी श्री सुनीता श्री जी म.सा., साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने ***''पाकर के तपस्वी को हम हर्ष मनाएँ''*** तपस्या गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा., साध्वी श्री अनुमिता श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. पूर्व में 6, 8, 9, 31, 33 एवं उपवास आदि अनेक तपों से अपने जीवन को भावित किया है। केसरिया-केसरिया गीतों से सम्पूर्ण सभा तपमय हो गई। दोपहर में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने सामायिक, प्रतिक्रमण, दया, पौषध, संवर आदि के बारे में विस्तार से बताते हुए त्याग-प्रत्याख्यान करवाए।

धर्म-श्रद्धा से होती है हित-अहित प्रज्ञा जागृत

10 अगस्त 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना एवं धर्मतत्त्व का बोध श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. करवाया। तत्पश्चात् विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ***''धर्म-श्रद्धा दृष्टि देती है। इससे सत्य-असत्य क्या है? कौन मेरा है? कौन पराया है? क्या सही और क्या गलत है? इसका ज्ञान हो जाता है। इससे प्रज्ञा जागृत हो जाती है, यथार्थ का बोध हो जाता है एवं धन-सम्पत्ति, वैभव से आसक्ति हट जाती है। धर्माराधना अपनी समझ के अनुसार करें। दूसरे के निर्णय से नहीं चलें। स्वयं के निर्णय से चलेंगे तो ठोकर नहीं लगेगी। धर्म मेरा प्राण है। जैसे अरणक धर्म में अडिग रहे वैसे ही हमारी भी धर्म-श्रद्धा प्रबल बने और हमारी हित-अहित प्रज्ञा जागृत हो जाए। धर्म जिसकी रुह-रुह में बस जाता है उसे कोई डिगा नहीं सकता और अधर्म कभी तिरा नहीं सकता। आज हम धर्म में जीते हैं या अधर्म में? सत्य में जीते हैं या असत्य में? क्रोध, अहंकार, माया में जीते हैं या क्षमा, नम्रता, सरलता में? आत्मचिन्तन करें।''*** सुनन्दा चारित्र भाग का सुन्दर विवेचन प्रस्तुत कर आचार्य भगवन् ने सभी को भावविभोर कर दिया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा के शरीर से निकलने के बाद इस शरीर को कोई रखने वाला नहीं है। धन, परिवार, स्त्री में आसक्त न बनें। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा, आदि साध्वीवर्याओं ने ***''धन्य-धन्य भाग्य हमारे''*** गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया। कई तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने नवकारसी प्रत्याख्यान का विस्तार से वर्णन प्रस्तुत किया। मदनलाल जी सिंघवी, मुंबई के निधन पर मारू परिवार, भीलवाड़ा ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति व सन्देश प्राप्त किया।

आदर्श शीलव्रत

मात्र 33 वर्ष की आयु में युवारत्न स्वाध्यायी श्री राकेश जी नेहा जी बोहरा, अक्कलकुआ ने आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण कर विशेष आदर्श उपस्थित किया। इस श्रेष्ठ कार्य की यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है। यह युगल इस भौतिकता की चकाचौंध में ब्रह्मचर्य की मिशाल प्रस्तुत कर सभी के लिए प्रेरणास्रोत बन गया।

प्रशंसा में नहीं, प्रसन्नता में जीएँ

11 अगस्त 2023। मंगलमय भोर के साथ ही प्रार्थना के स्वर प्रस्फुटित हुए। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी एवं दशवैकालिक सूत्र के साथ ही 9 आचार्यों के जीवन परिचय आदि की सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की।

प्रवचन सभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी के मध्य परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी पावन वाणी में फरमाया कि ''***जो अतिचिंता व आसक्ति में जीता है, आपाधापी व कामविकार में जीता है, उसे बुढ़ापा जल्दी आता है और जो निश्चिंत होकर प्रसन्नता में जीता है, उसे बुढ़ापा जल्दी नहीं आता। हम प्रशंसा में खुश रहते हैं या प्रसन्नता में? प्रशंसा मीठा जहर है, प्रशंसा भूतनी है, जो कभी पीछा नहीं छोड़ती है। प्रशंसा के दो शब्द कान में पड़ जाएँ तो इसकी चाह लगी रहती है। प्रशंसा की चाह नहीं करते हुए प्रशंसनीय कार्य करते रहना चाहिए। जो प्रशंसा नहीं चाहता उसके पीछे प्रशंसा छाया की तरह दौड़ती है। दृढ़-श्रद्धा होगी तो मन चंचल नहीं होगा। कठिनाई में भी हमारी धर्म-श्रद्धा मजबूत रहे। धर्म क्रिया, तपस्या एक मात्र कर्मनिर्जरा के लिए होनी चाहिए।***'' आपश्री जी ने सुनंदा चारित्र भाग का सुन्दर विवेचन प्रस्तुत किया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने मन, वचन, काया के संयम की प्रेरणा देते हुए फरमाया कि जीवन में अगर कुछ करना है तो बेहतर कार्य करें। साध्वी मण्डल ने ***''राम गुरु के पड़ज्यो पाँव, मोक्ष मिलेगा सुनो भैया!''*** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्याओं के विभिन्न प्रत्याख्यान हुए।

मध्यप्रदेश सरकार के पूर्व गृहमंत्री श्री हिम्मत जी कोठारी, रतलाम, शिखर सदस्यगण ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। परम गुरुभक्त श्री मदनलाल जी आँचलिया-नोखामण्डी के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति और सन्देश प्राप्त किया। 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम अनेक जनों ने ग्रहण किया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने 21 प्रकार के धोवन पानी एवं विहार सेवा में रखे जाने वाले विवेक की विस्तृत व्याख्या की।

राग-द्वेष मेरा स्वरूप नहीं

12 अगस्त 2023। प्रात:कालीन दैनिक धार्मिक कार्यक्रमों के पश्चात् प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''***मन चंचल होने के कारण धर्माराधना में नहीं लग पाता है। मन की चंचलता के कारण हम स्थिर नहीं हो पाते। जिसकी धर्म-श्रद्धा दृढ़ होगी उसका मन चंचल नहीं होगा। अपने मन पर अपना नियंत्रण होना चाहिए। नियंत्रण नहीं होने का कारण पुद्गलों से प्रीत है। सिद्धत्व हमारा आदर्श हैं, जिसे हमें प्राप्त करना है। तीर्थंकर देव भी सिद्ध भगवान का स्मरण करते हैं और यह मानकर स्मरण करते हैं कि सिद्धत्व मेरा लक्ष्य है, मेरा उद्देश्य है। अनंतानंत सिद्ध भगवान जिस राह में आगे बढ़े हैं,***

उसी राह पर मुझे आगे बढ़ना है। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र के मार्ग पर वे गतिशील हुए। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र जब प्रकट होते हैं तो व्यक्ति अपनी पहचान कर पाता है। उसे बोध हो पाता है कि राग मेरा स्वरूप नहीं है, द्वेष मेरा स्वरूप नहीं है। राग-द्वेष से रहित अलग ही मेरा स्वरूप है। क्रोध, मान, माया, लोभ ये मेरी आत्मा के गुण नहीं हैं। कर्मों की मिलावट के कारण ये अवस्थाएँ मेरे भीतर पैदा हुई हैं। कर्मों को हटाऊँगा तो मेरा वास्तविक स्वरूप प्रकट हो पाएगा। वीर प्रभु की जय बोलें, अन्तर भाव संजोएँ कि मेरे भीतर भी वे ही भाव जगें। सत्य की पहचान करने का सामर्थ्य जगे। भगवान महावीर ने भी ऐसे ही सिद्धत्व को जगाया।''

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि महान सद्गुरु आचार्य भगवन् का चातुर्मास प्राप्त हुआ है। जो इस अवसर का लाभ उठाता है वो धन्य-धन्य हो जाता है। आपश्री जी ने तप गीत ***''शासन का गौरव बढ़ाते हुए नीमच चातुर्मास को यादगार बनाया गया''*** प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा., साध्वी श्री सम्पदा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने ***''जब भी हो गुरुदेव के दर्शन, समझो तीर्थ हो गया''*** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री हर्षितमुनि जी म.सा. ने दस दिन गुरुदेव के साथ साधना से जुड़ने हेतु प्रेरित किया। आचार्य भगवन् के आह्वान पर कई भाई-बहिनों ने दशवैकालिक सूत्र का प्रथम अध्ययन कण्ठस्थ करने का संकल्प लिया। कई चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं में तपस्याओं का क्रम जारी है। दोपहर में महापुरुषों के ज्ञानचर्चा, आगम वांचनी एवं प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

रात्रि में '**एक शाम प्रभु गुरुभक्ति के नाम**' कार्यक्रम में श्री नीरज मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री सुमित मुनि जी म.सा., श्री गुणीश मुनि जी म.सा. आदि ने भक्ति गीतों से सबको सराबोर कर दिया।

पोशाक नहीं, मन परिवर्तन करें

13 अगस्त 2023। परम पूज्य आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त विशिष्ट आयाम रविवारीय समता शाखा में धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं की उपस्थिति हर्षानुभूति कराने वाली रही। हर कोई समता आराधना से अपने जीवन को पावन करने हेतु आतुर नजर आया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में विशेष अध्ययन कराया।

नीमच चातुर्मास में दैनिक धार्मिक कार्यक्रमों की धूम मची हुई है। रविवार होने से आज की धर्मसभा में विशेष उपस्थिति रही। गुरुभक्तों का अपार जनसमूह प्रवचन पाण्डाल से बाहर तक खड़े होकर शान्तिपूर्ण तरीके से अमृतवाणी का पान कर रहे थे। आचार्य भगवन् ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ***''लोगों का मन अतृप्त बना रहता है। अतृप्ति अशान्ति की जनक है और तृप्ति शान्ति की जननी है। शान्ति कहीं बाहर से नहीं आएगी। वह अपने भीतर से ही प्रकट होगी। आराधना ऐसी करें कि हमारी सारी बुराइयाँ नष्ट हो जाएँ। हमारे भीतर बुराइयाँ नहीं हो ऐसी बात नहीं है। कितनी भी अच्छाइयाँ हों, किन्तु बुराइयाँ भी हमारे भीतर हैं। पर्व पर्युषण आ रहे हैं। अब हमारी धर्माराधना, धर्मक्रियाएँ मन को शान्त करने की दिशा में होनी चाहिए। हमें बोलना कम और करना ज्यादा है। केवल पोशाक परिवर्तन नहीं, अपितु मन को परिवर्तित करना चाहिए। यह एक दिन में नहीं होता। इसके लिए निरन्तर अभ्यास की जरूरत है।''*** आचार्य भगवन् ने सुनन्दा चारित्र भाग की सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कब किसकी मौत आ जाए पता नहीं। कोई लम्बे समय तक यहाँ रहने वाला नहीं है। जो मेरा है वो जाता नहीं और जो जाता है वो मेरा नहीं है।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरुदेव को मानना सरल है, पर गुरुदेव की आज्ञा को मानना कठिन है। हमें नकारात्मक सोच नहीं रखनी चाहिए। सदैव सकारात्मक सोचें। हम समस्या का नहीं, समाधान का अंग बनें।

साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ***''गुरु राम के चरणों में वन्दन बारम्बार''*** गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया। **'दस दिन गुरुदेव के साथ साधना'** कार्यक्रम का आगाज हुआ। बच्चों के शिविर में नैतिक शिक्षा दी गई।

युवती शक्ति शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धार्मिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया। धर्मपाल नवयुवकों ने उन्हेल से 190 किमी. तथा सरवानिया महाराज के समता युवा संघ के सदस्यों ने नीमच तक पैदल यात्रा कर गुरुचरणों में उपस्थित हो गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के पश्चात् जैन सोशियल ग्रुप के पदाधिकारियों व सदस्यों ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर से विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया।

पर्युषण पर्व का शानदार आगाज

151 से अधिक अठाई, 500 पौषध, संवर एवं हजारों सामायिक व अन्य धर्माराधना के साथ 24 घण्टे का अखण्ड नवकार महामंत्र जाप प्रारंभ, पच्चक्खाण से निर्वाण के अन्तर्गत 200 नियमावली से जुड़े, पर्वाराधना हेतु हजारों श्रद्धालु उमड़े, सौभाग्य से मिली राम गुरु की शरण

पर्युषण पर्व हमें जगाने आया है, सालभर का लेखा-जोखा करने आया है।

14 अगस्त 2023। जैन समुदाय के सबसे महान पर्व पर्वाधिराज पर्युषण का आगाज दिव्य महापुरुषों के पावन सान्निध्य में हुआ। नीमच एवं आस-पास के अनेक क्षेत्रों सहित देश-विदेश से श्रद्धालु धर्मप्रेमी धर्माराधना हेतु उपस्थित होकर जीवन धन्य बना रहे हैं। प्रात: मंगल प्रार्थना में ***''मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान''*** गीतिका का सामूहिक संगान हुआ। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान कक्षा में जैन सिद्धान्त बत्तीसी की सटीक व्याख्या प्रस्तुत की।

आज के पावन दिवस पर भक्तों की अपार उपस्थिति के मध्य दयालु, कृपालु, आचार्य भगवन् ने अपने दिव्य सन्देश में फरमाया कि ***''धर्म-श्रद्धा में देर करने वाली बात को मैं अपने मन-मंदिर में स्थान नहीं दूँगा। ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा होती है तो ही धर्म यात्रा में आगे बढ़ा जा सकता है। कार्तिक सेठ धर्म में दृढ़ थे। धर्म का फल लेने के लिए पहले आपको सरल बनना होगा। शुद्धि, छल-कपट से नहीं सरल हृदय से होती है। सरल हृदय में धर्म टिकता है। स्तुति से हृदय सरल होगा। उसमें धर्म के बीज बोएँगे तो परिवर्तन आएगा। संवेग-निर्वेद की भावना को पैदा करना होगा। जो कामभोग से ऊपर उठता है, वही मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ता है। पर्व पर्युषण आने पर क्या आपके भीतर वैसी खुशी हुई जैसी अयोध्या में राम के आगमन पर हुई थी? क्रोध, अहंकार से हटकर शान्त भाव से, सरल भाव से धर्म की आराधना करनी है। तपस्या अहंकार के लिए नहीं, अपितु मन को शान्त रखने के लिए की जाती है।''*** गुरुदेव के श्रीमुख से-

पर्युषण की आई रे बहार, नीमच नगरी में। जागो-जागो करें मनुहार, नीमच नगरी में।।

भाव गीत प्रस्फुटित होते ही सभी आत्मविभोर हो गए। न कारण है, न बहाना है, अन्तर ज्योति को जगाना है। अंतगड सूत्र में वर्णित महापुरुषों से प्रेरणा लेनी है।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में भजन *''आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में''* प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि **''गुरु की महिमा अपरंपार है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह पर वे स्वयं चलते हैं, फिर इनके पालन हेतु सबको प्रेरणा देते हैं। हम किनके साथ रहते हैं और हम क्या पढ़ते हैं? ये दो बातें जीवन को आधार देती हैं और अज्ञात रूप से मन-मस्तिष्क पर प्रभाव डालती हैं। दुर्जन से बुरे कार्य की और सज्जन से अच्छे कार्य की प्रेरणा मिलती है। सज्जन की कथा से हमारे भीतर सद्भावों का विकास होगा। तीर्थंकर भगवान एवं आचार्यादि के गुणगान करने से सुलभबोधि की प्राप्ति होती है। हम मात्र स्तुति प्रशंसक नहीं बनें अपितु हमारा जीवन गुणों का संक्षिप्त रूप बने। महापुरुषों के गुणों को जीवन में आत्मसात् करें। 200 साल के बाद भी महान आचार्यों की गौरवगाथा आज भी गूँज रही है।''** आपश्री जी ने गौरवशाली आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने अंतगड सूत्र के मूल अर्थ का सुंदर विवेचन करते हुए फरमाया कि इस शास्त्र में चरमशरीरी अर्थात् उसी भव में मुक्ति प्राप्त करने वाली 90 महान आत्माओं का वर्णन है। पर्युषण पर्व के अवसर पर इसके पठन की परम्परा रही है। यह साधकों को कर्म क्षय की दिशा में प्रेरणा देता है। हम सांसारिक मोहमाया में उलझकर ना रहें। आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ें।

धर्मपाल नवयुवकों ने सप्ताह में एक सामायिक करने के प्रत्याख्यान लिये। अन्य विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दोपहर में सामायिक का महत्त्व एवं शुद्ध विधि व 32 दोष आदि की जानकारी दी। महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए। नीमच व बाहर के अनेक स्थानों से पधारे श्रद्धालु हजारों की संख्या में सामायिक, दया, संवर, पौषध, उपवास, एकासना, बियासना, बेला, तेला, अठाई आदि तपस्याओं में लीन हो जीवन धन्य बना रहे हैं।

महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत अनेक भाई-बहिन तप-त्याग से जुड़ रहे हैं। पूरा नीमच गुरु राम के रंग में रंगा हुआ है।

24 घण्टे का अखण्ड नवकार महामंत्र का जाप प्रारंभ हुआ। यह क्रम 8 दिन लगातार जारी रहेगा। इसमें धर्मप्रेमी भाई-बहिन बड़े ही उत्साह से भाग ले रहे हैं। पर्युषण के रंग ज्ञान ध्यान के संग के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पच्चक्खाण से निर्वाण में 200 त्याग-पच्चक्खाण की नियमावली में लोगों ने बढ़-चढ़कर त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये।

आत्महित कार्य ही हैं सच्चा कार्य

15 अगस्त 2023। प्रात:कालीन मंगल बेला में *''वीर जिनेश्वर सोही''* एवं *''पंच परमेष्ठी गुण गाएँगे''* आदि सामूहिक प्रार्थना हुई। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में तलस्पर्शी अध्ययन कराया।

पर्वाधिराज पर्व पर्युषण के दूसरे दिवस नीमच की पावन धरा पर आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगम मर्मज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में भजन-

पर्व पर्युषण है बंदे, करो कुछ आत्मचिन्तन।
किया क्या आज तक तुमने, करो इसका गहरा चिंतन।।

प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि ''**अब तक हमने जो भी चिन्तन किया है, वो शरीर, परिवार व परिजनों के लिए किया है। स्वार्थ के वशीभूत अनेक चिन्तन चले होंगे। हमने जितने वर्ष जीवन जीया है, उनमें से कितना समय आत्महित के चिन्तन में लगाया है? जो दिवस एवं रात्रियाँ बीती हैं वे वापिस आने वाली नहीं हैं। हमारा कितना ही समय इधर-उधर व्यर्थ एवं निरर्थक चला गया है। आत्महित में जो कार्य करेंगे वही सच्चे कार्य होंगे। दुनिया से खाली हाथ जाना है। कोई किसी को याद करने वाला नहीं है। काम-क्रोध के वशीभूत होकर पाप में जिन्दगी को कितना लगाया? यह चिन्तन करने की जरूरत है। लोभ-लालच के वशीभूत होकर क्या-क्या कृत्य किये? इसकी समीक्षा व आलोचना करनी है। पर्युषण महत्त्वपूर्ण पर्व है। एक ही दिशा में हमारी गति होगी तो हम सुधार करते जाएँगे। प्रतिक्रमण की भावना गहरी होनी चाहिए, तभी पर्युषण पर्व मनाना सार्थक होगा। अन्तगडदशा सूत्र के माध्यम से कई प्रसंग हमारे सामने आ रहे हैं। इससे हमें प्रेरणा लेनी है। मोह-ममत्व के भाव को किनारे करने की कोशिश करनी चाहिए।**'' माह में 6 पौषध करने की विशेष प्रेरणा आचार्य भगवन् ने दी।

आचार्य भगवन् ने *''आजादी का समय सुहाना आओ गाएँ गान, जय-जय भारत देश महान''* देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर सभी में राष्ट्रप्रेम की भावना भरते हुए फरमाया कि ''**आज स्वतंत्रता दिवस है। यह दिवस हमें नई प्रेरणा देता है। राष्ट्रभक्ति हेतु लाखों लोगों ने कुर्बानी दी। तन जावे तो जावे पर सत्य धर्म नहीं जावे। लोग आजादी के लिए डटे रहे। आज पाश्चात्य संस्कृति हावी होने से हमारी संस्कृति इससे विकृत हो रही है। पहले दूध-दही की नदियाँ बहती थीं और आज विदेशी मुद्रा के लिए खून की नदियाँ माँस निर्यात के रूप में बहायी जा रही हैं। भारत का पशुधन खत्म होता जा रहा है। क्षण-क्षण जीवन जा रहा है। मोहमाया को छोड़कर धर्मध्यान में लगें।**''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने स्मृतिशेष आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म.सा., आचार्य श्री शिवलाल जी म.सा., आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. की जीवनी पर हृदयस्पर्शी विवेचन प्रस्तुत कर महापुरुषों के एक-एक गुणों को आत्मसात् करने की प्रेरणा दी। सही राह पर निरन्तर बढ़ते रहने, अपना निर्णय स्वयं लेने, मनोबल मजबूत करने एवं वैराग्य भाव को जीवन में आगे बढ़ाने का आह्वान आपश्री जी ने किया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने अंतगडदशा सूत्र के मूल अर्थ का सुन्दर विवेचन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पर आसक्ति और शुभ कर्म में कभी भी देरी नहीं करनी चाहिए। साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का पावन सान्निध्य मिला है। अपने भावों को विशुद्ध बनाकर हमें आराधक बनना है। बाहरी आकर्षण से हटकर गुरुचरणों में आत्मा की चमक को बढ़ाना है।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा, साध्वी श्री सुनीता श्री जी म.सा, साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने *''समवशरण लगा आओ भव्य प्राणी, आये युगल भगवन्, करें इनको नमन''* भक्ति गीत प्रस्तुत किया।

संघ अध्यक्ष एवं मंत्री ने तपस्वी आत्माओं के प्रति अहोभाव व्यक्त किये। चमड़े की वस्तुओं का प्रयोग नहीं करने का संकल्प सभा में उपस्थित हजारों भाई-बहिनों ने ग्रहण किया। अनेक चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविका वर्ग में तप क्रम अनवरत जारी हैं। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा समाधान,

प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर से आगमसम्मत सटीक समाधान प्राप्त कर जिज्ञासु जनता अभिभूत हो रही है।

सैद्धान्तिक धारणा की महत्त्वपूर्ण जानकारी श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दी। विभिन्न तत्त्वज्ञान कक्षाएँ जारी हैं। अखण्ड नवकार महामंत्र का जाप 24 घण्टे लगातार चल रहा है। सभी कार्यक्रमों में धर्मप्रेमी श्रद्धालु उत्साह व उमंग के साथ भाग लेकर जीवन धन्य बना रहे हैं। तेले, अठाई व अन्य तपों की धर्माराधना निरन्तर हो रही है। श्री साधुमार्गी जैन संघ, श्री साधुमार्गी महिला मण्डल, समता युवा संघ एवं बहू मण्डल, नीमच सहित जैन एवं जैनेतर श्रद्धालु सभी आयोजनों को सफल बनाने हेतु दृढ़ संकल्पित नजर आ रहे हैं।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग	
उपवास	साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. – 33 (गतिमान) साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा. – 25 (गतिमान) साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. – 24 (गतिमान) साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. – 18
श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	पारसमल जी सुमित्रादेवी कोठारी–कुंथुवास, भीमराज जी मेहता–काटजू, सोम प्रकाश जी पुष्पा जी नाहटा–सूरत, गौतमचंद जी–ललितादेवी नागौरी–मुम्बई, कोमलचंद जी कुंभारे–वारासिवनी, मोतीलाल जी छाजेड़–गंगाशहर, रतनलाल जी तेजावत–कानोड़, भंवरलाल जी सुशीलादेवी दक–बारडोली, सज्जन सिंह जी सुभद्रादेवी झामड़–इन्दौर, सुन्दरलाल जी बसंतीदेवी पींचा–गुवाहाटी, हनुमानमल जी भूरा–गंगाशहर, लालचन्द जी चन्दादेवी–अछोली, देवीलाल जी जैन–अरनोदा, जगदीश जी पालीदा–सूरत, राकेश जी नेहा जी बोहरा–अक्कलकुआ, बाबुलाल जी बोरदिया–प्रतापगढ़, संजय जी बोहरा–चिकारड़ा, बंशीलाल जी पोखरना–कानोड़, मांगीलाल जी वीरवाल–जावद, ज्ञानचन्द जी धर्मपाल–गुराड़िया, प्रकाशचन्द जी डूंगरवाल–भीलवाड़ा, मनोहरलाल जी जोधावत, सुभाष जी जीवनबाला जी देवड़ा–रतलाम
मासखमण	अभिषेक जी आनंदीलाल जी कांठेड़ (31 उपवास), रेखा जी प्रकाश जी आँचलिया (31 उपवास), कंचनबाई लाभचंद जी बोड़ावत–धामनिया (31 उपवास), मंजू जी छिंगावत (31 उपवास), अरुण जी पटवा, ज्योति जी पटवा, अमित जी पवन जी गाँधी–केसुन्दा (30 उपवास), कलाबाई सागरमल जी धींग, वनिता जी श्रीपाल जी नपावलिया (31 उपवास)
उपवास	47– सरिता जी मुणेत (गतिमान), 36– संजय जी चौधरी–नीमच, 26– प्रेमबाई नाहटा, 24– सरिता जी नागौरी, दिनेश जी गांधी, संगीता जी बोड़ावत, 15– अरुणादेवी रंगवाला (गतिमान), 11– रेणु जी खिंदावत, रिद्धी जी खिंदावत, ऊषा जी कांठेड़, रेणु जी कोठारी, भाविन जी खिंदावत, प्रगति जी खिंदावत

एकान्तर	एक वर्ष– मंजू जी पगारिया
एकासन	पाँच माह – धर्मचन्द जी बोड़ावत–धामनिया मासखमण – कविता जी कोठारी, करणमल जी कोठारी
सामायिक	वर्ष में 2100 – लालचन्द जी रांका–सारोठ वर्ष में 1100 – महेन्द्र जी दसोरिया–इन्दौर
गाथा का स्वाध्याय	वर्ष में 3 लाख – कमला जी पगारिया, मंजू जी पगारिया वर्ष में 1 लाख – सुशीला जी दसोरिया, लता जी दसोरिया, आशा जी दसोरिया प्रतिदिन 200 – संजय जी बैद–रायपुर
पक्की नवकारसी	राजमल जी भण्डारी
पक्की पोरसी	300 – कविता जी नाहर–बालोद, प्रतिमा जी टाटिया–बालोद 100 – कुलदीप जी गांधी

-महेश नाहटा श्रमणोपासक

धैर्यता मत खोईये

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

अन्तरंग की खोज यद्यपि बहुत रूक्ष विषय है, किन्तु जब रूक्ष विषय से भी तत्त्व मिलने वाला होता है तो समझदार मानव उसे छोड़ता नहीं है।

बंजर भूमि पर भी कृषक परिश्रम करना नहीं छोड़ता है। वह उस भूमि को भी खोद-खोद कर कंकर-पत्थर बाहर निकालकर उसे सरस और उपजाऊ बना देता है और उसमें समय पर बीज बो देता है तथा अत्यन्त परिश्रम के साथ उसका सिंचन संरक्षण करने लगता है। अब उसका परिश्रम चमत्कार दिखाता है और वह बंजर भूमि भी फसल से लहलहा उठती है। यह है परिश्रम और धैर्य का फल। ठीक उसी प्रकार आज के मानवों के अन्तरंग का जीवन भी बंजर हो चुका है। वह काम-क्रोध, मद-मोह, विषय-विकार आदि कंकर-पत्थरों से भरा पड़ा है। जब तक इस बंजरता को दूर नहीं किया जाएगा तब तक उनमें धर्म का बीज नहीं बोया जा सकेगा। इसके लिए कठिन परिश्रम करना ही होगा। अविचल विश्वास और अटल धैर्य के साथ परिश्रम किया जाए तो अन्तरंग जीवन में भी शान्ति की वह फसल लहलहा सकती है। आवश्यकता है धैर्य के साथ सत्पुरुषार्थ करने की।

साभार- नानेशवाणी-8 (परदे के उस पार) श्रमणोपासक

क्रोध, वैर का उपचार : क्षमा

-सुरेश बोरदिया, मुम्बई

शरीर में कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। इन रोगों के प्रभाव से शरीर की आरोग्यता प्रभावित होती है। रोग के रहने से शरीर का विकास सुचारू रूप से नहीं हो सकता। जिस तरह शरीर में रोगों की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार आत्मा पर भी दुर्गुण रूपी कई रोग पनपते रहते हैं, जिनसे आत्मा का विकास प्रभावित होता है। आत्मा का विकास मार्ग अवरुद्ध हो जाने से आत्मा का विकास रुक जाता है। इन रोगों में दो रोग हैं- क्रोध एवं वैर।

शरीर में व्याप्त रोगों का उपचार चिकित्सकों द्वारा किया जाता है एवं आत्मा पर लगे रोगों का उपचार तीर्थंकर भगवान बता चुके हैं। चिकित्सकों के प्रयास से भी शारीरिक रोगों का अगर सफल निवारण नहीं हो पाता तो वे रोग जीवन रहने तक ही अपना प्रभाव दिखा सकते हैं। कोई भी शारीरिक रोग प्राणान्त के साथ ही नष्ट हो जाता है। लेकिन आत्मा पर लगे हुए क्रोध, वैर जैसे रोग एक भव नहीं बल्कि भव-भवान्तरों तक बने रहते हैं। एक भव का अन्त हो जाने पर भी क्रोध, वैर जैसे घातक रोग पीछा नहीं छोड़ते हैं। ये जीव को दुर्गति में धकेल देने में भी सक्षम होते हैं।

भव-भव के लिए घातक ऐसे रोगों का तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा बताया गया उपचार है- **क्षमा**। क्षमा एक ऐसा उपचार है जिससे क्रोध, वैर का सर्वथा अन्त किया जा सकता है। वैर, क्रोध एक तरह की अग्नि हैं और क्षमा शीतल जल है। अग्नि कितनी ही प्रबल क्यों न हो, जल के प्रभाव से उसका शान्त हो जाना निश्चित है।

क्षमा का उद्‌गम कहाँ से होगा? समता से, सहनशीलता से। समता और सहनशीलता के बिना क्षमा का उद्‌गम नहीं हो सकता। किसी ने मुझे कुछ कह दिया, मेरा बुरा करने का प्रयास किया, लेकिन अगर मैं उसे समता भाव से सहन कर लूँ तो वहाँ क्षमा का उद्‌गम होगा और मैं उसका प्रतिकार करने का प्रयास करूँ तो वहाँ क्षमा कहाँ से प्रकट होगी? बिना समता, बिना सहनशीलता के क्षमा संभव नहीं है। प्रतिकार करने पर वह क्रम चलता रहेगा और कब तक चलेगा यह कहना मुश्किल है।

देता गाली एक है, पलटत होत अनेक।
जो गाली पलटे नहीं, रहे एक की एक।।

किसी की एक गाली का जवाब देने मात्र से गालियों का क्रम शुरू हो सकता है और जवाब न देने पर वह एक गाली सिर्फ एक ही रहकर सीमित हो जाएगी।

चार कषायों में क्रोध को प्रथम स्थान पर रखा गया है। क्रोध एक ऐसा दुर्गुण है जो सभी सद्‌गुणों का नाश कर सकता है। चण्डकौशिक के प्रसंग पर विचार करें तो क्रोध के परिणाम को हम अच्छी तरह समझ सकते हैं। चण्डकौशिक का जीव पूर्व के एक भव में साधु था, लेकिन समता, सहनशीलता के अभाव में अत्यन्त क्रोधी बन गया और उसी क्रोध के कारण पतित होता हुआ मनुष्य भव से तिर्यंच गति में यानी साँप के भव को प्राप्त किया।

जैसा कि क्रोध व वैर का सिलसिला एक भव नहीं अपितु अगले अनेक भवों तक चलता रहता है। उसी प्रकार चण्डकौशिक साँप के भव में भी क्रोध से भरा हुआ था और क्रोध भी ऐसा कि उसकी नजरों मे ही विष भरा हुआ था। उसका क्रोध, उसका विष इतना खतरनाक था कि उसके रहने के स्थान के आस-पास मनुष्य तो क्या, पशु-पक्षी तक नहीं आ पाते थे। और तो और उसके आस-पास लहराते हुए हरे-भरे वृक्ष तक उसके विष के प्रभाव से कुम्हलाकर सूख चुके थे।

भगवान महावीर उसी मार्ग से विहार करने लगे तो गाँव वालों ने दूसरे मार्ग से विहार करने की विनती की। प्रचण्डतम अग्नि को शान्त करने हेतु शीतल जल का संयोग काफी है। भगवान की समता, क्षमा रूपी जल के सामने चण्डकौशिक का क्रोध नगण्य था। भगवान के हृदय में क्षमा रूपी लहरें इतनी शक्ति-सम्पन्न थी कि भगवान उसी मार्ग से विहार करने लगे। पापी को पावन, क्रोधी को शान्त करने की भावना से भगवान चण्डकौशिक की बाम्बी तक पहुँच गए और वहीं ध्यानस्थ खड़े हो गए।

जिस स्थान पर पक्षी भी नहीं आ पाते, वहाँ किसी मनुष्य को आया जानकर चण्डकौशिक बाम्बी से बाहर निकला और क्रोध से फुँफकारने लगा, लेकिन भगवान पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। चण्डकौशिक का क्रोध चरम पर पहुँच गया, लेकिन क्षमा के सागर भगवान महावीर तो अपने ध्यान में लीन खड़े थे। उन्हें चण्डकौशिक के क्रोध से कोई लेना-देना नहीं था। ऐसी समता के सामने क्रोध का क्या प्रभाव होगा? चण्डकौशिक ने अपने फुँफकारने का कोई असर नहीं देखा तो उसने भगवान के चरणों में डँस लिया, लेकिन भगवान अभी भी अपने ध्यान में समतापूर्वक लीन थे। चण्डकौशिक ने देखा कि जहाँ उसने भगवान को डँसा था, वहाँ से लाल रक्त की बजाय श्वेत दुग्ध की धार बहने लगी। वह अब भगवान की ओर देखने लगा। भगवान फरमाने लगे-

बुज्झं बुज्झं चंडकोसिया, किं न बुज्झइ।

हे चण्डकौशिक! जागो, जागो। क्यों नहीं जाग रहे। भगवान के शीतल वचन चण्डकौशिक की क्रोधाग्नि को बुझाने के लिए पर्याप्त थे। सुनकर चण्डकौशिक विचार करने लगा। उसका चिन्तन ऐसा चला कि उसे जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त हो गया। उसे अपना पूर्वभव याद आने लगा।

यहाँ चण्डकौशिक के श्रवण-विवेक पर हमें बहुत कुछ विचार करना होगा। चण्डकौशिक ने भगवान का उपदेश कितना सुना था? मात्र कुछ ही वचन तो सुने थे। कुछ ही शब्द तो सुने थे उसने। उन कुछ शब्दों के श्रवण करने से ही वह एक सफल श्रोता बन गया। उसका श्रवण-विवेक जागृत होकर उच्च स्थिति तक पहुँच चुका था। एक तिर्यंच गति का जीव होकर भी वह उच्च कोटि का श्रोता साबित हो गया।

कुछ ही समय पहले जो चण्डकौशिक भगवान के सामने फुँफकार रहा था, जिसने भगवान के चरणों में डँस लिया था, अब वही चण्डकौशिक भगवान की प्रदक्षिणा करने लगा। क्रोध की दावानल बुझ चुकी थी और क्रोध के स्थान पर समता का प्रादुर्भाव होने लगा। चण्डकौशिक ने भगवान की तीन बार प्रदक्षिणा की।

चण्डकौशिक का चिन्तन अब ऊर्ध्वमुखी बन चुका था। उसने संथारा ग्रहण करने का निश्चय किया और अपने निश्चय को साकार करने लगा। वह अब संथारा साधना में लीन होकर विचार करने लगा कि जंगल के जीव आस-पास के गाँवों के लोग जो मेरे भय से भयभीत रहते थे, वे अब भी मुझे देखकर भयभीत हो सकते हैं। उनको भयमुक्त करने के लिए उसने अपना मुँह बाम्बी के अन्दर की तरफ कर लिया। धीरे-धीरे उसकी बदली हुई प्रवृत्ति की चर्चा फैलने लगी।

चर्चा तो पहले से ही फैली हुई थी, लेकिन अब उसमें बहुत अन्तर आ चुका था। पहले उसके क्रोध और विष की चर्चा होती थी, लेकिन अब चर्चा हो रही है उसकी क्षमा की। अब लोग उसकी बाम्बी तक पहुँचने लगे और उसकी पूजा स्वरूप कई तरह के सुगंधित द्रव्य चढ़ाने लगे। उसकी गंध से चींटियाँ आदि अनेक प्रकार के जीव आकर उसके शरीर को जगह-जगह से काटने लगे, जिसके कारण चण्डकौशिक का शरीर छलनी हो गया। लेकिन चण्डकौशिक को अब शरीर की कहाँ परवाह थी! वह तो शरीर से अलग आत्मा में रमण कर रहा था। संथारा साधना भी इतनी यतनापूर्वक कि जरा-सा हलन-चलन तक नहीं कर रहा था, क्योंकि उसके मन में विचार चल रहा था कि ऐसा करने से उन चींटियों आदि जीवों की हिंसा हो सकती थी। अपने विष के

प्रभाव से कई जीवों के प्राण हरण करने वाला चण्डकौशिक आज छोटे-छोटे जीवों की रक्षा के लिए समतापूर्वक वेदना सहन कर रहा था।

जिस क्रोध ने उसे चण्डकौशिक बना दिया था, उस क्रोध का स्थान अब क्षमा ने ले लिया और उसी क्षमा का सुफल था कि संथारापूर्वक आयुष्य पूर्ण करके अब वह देवलोक में पहुँच गया।

पूर्वभव में क्रोध के कारण जो तिर्यंच गति में पहुँचा, वही अब क्षमा के प्रभाव से तिर्यंच गति से देवगति में पहुँच गया। इसका कारण है- क्षमा एवं श्रवण-विवेक का प्रभाव। भगवान के वचन सुनने से पूर्व तक तो वह क्रोध में ही था, लेकिन भगवान के वचन सुनकर उन्हें ग्रहण करके जो चिन्तन चला तो वह सफल श्रोता बन गया। '**चण्डकौशिक**' शब्द जब भी पढ़ने में, सुनने में आता है तो एक क्रोधी विषधर की छवि हमारे मन-मस्तिष्क में उभरती है। लेकिन वह क्रोधी भी क्षमावान, अच्छा व सफल श्रोता बन गया, जिसने भगवान की वाणी को सुनकर अपने श्रवण विवेक को जागृत कर दुर्गति से सुगति को प्राप्त कर लिया।

श्रवण लाभ का अवसर हम सभी को कितनी ही बार मिला होगा, लेकिन श्रवण करके ग्रहण कितना किया? हमने अपने श्रवण-विवेक को कितना जागृत किया? यह चिन्तन का विषय है। हम भी अपना विवेक जागृत करें और जो अमृत वचन श्रवण करें, उन्हें ग्रहण करने का लक्ष्य रखें। जिस तरह चण्डकौशिक ने श्रवण-विवेक से क्रोध को विराम देकर क्षमा को धारण किया उसी तरह हम भी क्षमा को धारण करें, क्षमावान बनें।

क्षमा एक उपचार है, जो क्रोध और वैर का अन्त करता है। क्षमा का हृदय में संचार होना चाहिए। उपचार को मात्र औपचारिकता तक सीमित नहीं रखकर वास्तविकता बनाएँगे तो निश्चित ही हमारा भी आत्मकल्याण होगा।

श्रमणोपासक

आवश्यकता

महिला उम्मीदवारों के लिए सुनहरा अवसर

- जैन हॉस्टल के लिए पूर्णतया शाकाहारी व धार्मिक प्रवृत्ति युक्त केयर टेकर।
- अनुभवी शिक्षकों/प्रधानाध्यापकों, समूह प्रबंधन का अनुभव रखने वाली गृहिणियों अथवा छात्राओं की देखभाल करने में अनुभवशील महिला कर्मचारियों की तलाश।
- जिम्मेदारियों में अनुशासन, रिकॉर्ड रखना, नयी छात्राओं का स्वागत करना, भावनात्मक समर्थन प्रदान करना और अतिरिक्त कार्य शामिल हैं।
- न्यूनतम मासिक वेतन 30,000/- रुपये व अन्य सुविधाएँ संस्था के नियमानुसार देय।

::: कार्य स्थल :::

नीमच - चातुर्मास के दौरान ..... **बीकानेर - शेष 8 माह**

जानकारी और आवेदन के लिए सम्पर्क करें :-

आर.पी. जैन	9929097608	(rpjain1687@gmail.com)
हर्षाली जैन	9413849431	(harshalijain7@gmail.com)
नयन रांका	7021380109	(nayan.ranka11@gmail.com)

श्रमणोपासक

विविध समाचार

:: मेवाड़ अंचल ::

निम्बाहेड़ा। समता प्रचार संघ द्वारा प्रतिभा खोज कार्यक्रम के अंतर्गत **'चलिए अंधकार से प्रकाश की ओर'** ज्ञान ज्योति शिविर का आयोजन श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में 18 से 22 जुलाई 2023 तक आदर्श कॉलोनी समता भवन में किया गया, जिसमें लगभग 80 बहिनों ने भाग लिया। समता प्रचार संघ के सह संयोजक सहित अनेक स्वाध्यायियों ने सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, गुणस्थान, कषाय, योग से कर्म बंधन, तीर्थंकर के अतिशय व महिला शक्ति के बारे में विस्तार से समझाया। अंतिम दिन समता प्रचार संघ संयोजक ने हमारा विजन क्या होना चाहिए विषय पर प्रेरणा प्रदान की। मोटिवेशनल स्पीकर सुश्री श्वेता जी बच्छावत ने 'प्रसन्नता मेरा धर्म सिद्ध अधिकार है। इसे कैसे प्राप्त करना?' विषय पर प्रभावी मोटिवेशन दिया। कार्यक्रम में स्थानीय संघ पदाधिकारियों, समता युवा संघ अध्यक्ष, मंत्री एवं वरिष्ठ श्रावकों की उपस्थिति रही। महिला मंडल अध्यक्षा ने आभार व्यक्त किया। सभी शिविरार्थी बहिनों को प्रभावना वितरित की गई। महापुरुषों की जय-जयकार के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **-रतनलाल पोरवाल**

उदयपुर। श्री वर्धमान साधुमार्गी स्थानकवासी जैन महिला समिति के सत्र 2023-2025 हेतु नवीन मनोनयन 6 मई 2023 को सर्वानुमति से निम्न प्रकार हुआ- **अध्यक्षा** नीलम जी पोरवाल, **मंत्री** सरोज जी चपलोत, **कोषाध्यक्षा** राजकुमारी जी बोरदिया।

पौषधशाला में शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा. के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही एकासना, आयम्बिल, उपवास, पौरसी की लड़ी चल रही है। 10 से 15 जुलाई तक आयोजित महिलाओं के शिविर में 55 महिलाओं ने भाग लिया। शिविर समापन पर हुई परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली बहिनों सहित सभी शिविरार्थियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। थोकड़े एवं ज्ञान की कक्षा नियमित प्रारंभ है।

समीक्षण ध्यान शिविर :- आचार्य श्री नानेश के समीक्षण ध्यान के अवदान को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से 5 से 7 जुलाई तक श्री श्वेताम्बर ओस्तवाल जैन संघ एवं वरिष्ठ नागरिक संस्थान, चित्तौड़गढ़ के संयुक्त तत्वावधान में शिविर आयोजित किया गया, जिसमें योगासन एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया गया। इस दौरान प्रशिक्षक डॉ. सत्यनारायण शर्मा ने लगभग 50 शिविरार्थियों को मानसिक शांति, भावनात्मक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक विकास हेतु प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं युवा संघ का सराहनीय सहयोग रहा। शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. ने ध्यान की उपयोगिता बताई।

-सरोज चपलोत, डॉ. सत्यनारायण शर्मा

प्रतापगढ़। शासन दीपिका साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में चातुर्मास में तप-त्याग का ठाठ लगा हुआ है। चातुर्मास प्रारंभ से ही एकासन, आयम्बिल एवं तेला तप की लड़ी चल रही है। अब तक 11 तेला तप की आराधना, बियासना का 1 एवं एकासना के 2 मासखमण पूर्ण हो चुके हैं। समता जी चिप्पड़ ने अठाई तप किया। संवर की आराधना का क्रम भी जारी है। अन्य अनेक तपस्याएँ जारी हैं। साध्वीवर्याओं

की प्रेरणा से युवाओं के लिए समता साधक शिविर, महिलाओं के लिए पंच दिवसीय समता साधिका शिविर एवं दो दिवसीय संस्कार शिविर आयोजित हुए, जिनमें अच्छी उपस्थिति रही। **–किरण मालू**

बड़ीसादड़ी। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6 के सान्निध्य में चातुर्मास का शुभारंभ तेले तप की आराधना के साथ हुआ। इस अवसर पर 27 तेले हुए। प्रार्थना, प्रवचन के साथ ज्ञान-ध्यान सीखने का क्रम जारी है। प्रवचन में साध्वी श्री विशालप्रभा श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा. द्वारा आगम आधारित हृदयस्पर्शी अमृतवाणी का प्रवाह हो रहा है, जिसे सुनकर श्रोता भावविभोर हो जाते हैं। तप के क्रम में पुरुष व महिलाओं में सामायिक की पचरंगी हुई है।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा. के सान्निध्य में श्री साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ का सामूहिक शिविर 9 से 11 जुलाई को एवं 32 सूत्रीय नियमावली शिविर आयोजित किया गया। साध्वी श्री निष्ठा श्री जी म.सा. ने 32 सूत्रीय नियमावली के बारे में समझाते हुए फरमाया कि सभी श्रावक-श्राविकाओं को विशेष रूप से 32 सूत्रीय नियमावली ध्यान में रखनी चाहिए ताकि साधुमर्यादा को सुरक्षित रखते हुए जीवन में समर्पणा, अनुराग एवं निष्ठा का विकास हो।

दिनांक 30 जुलाई से प्रत्येक रविवार को बालिकाओं का शिविर आयोजित किया जा रहा है एवं 5 जुलाई से 5 अगस्त तक महिलाओं का शिविर आयोजित हुआ। महिलाओं के शिविर में सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण एवं जैन सिद्धान्त बत्तीसी का अध्ययन कराया गया। सभी शिविरों में आशातीत उपस्थिति रही। सुश्री चन्दनबाला जी मेहता ने 9 उपवास एवं श्रीमती कलाबाई धींग के 25 उपवास (मासखमण के भाव) आदि की तपस्याएँ हुईं। **–प्रकाशचन्द मेहता**

:: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::

देशनोक। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत '**अब कर कमाल**' भाग 2 की एक्टिविटी 18 जून को जैन जवाहर मण्डल में आयोजित की गई, जिसमें 26 बच्चों ने भाग लिया। इसमें जूनियर के तीन व सीनियर के दो समूह बनाकर विभिन्न विषयों पर ज्ञानार्जन करवाया गया।

शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग के साथ चातुर्मास गतिमान है। प्रवचन में साध्वी श्री दुंदुभि श्री जी म.सा. द्वारा विनयशील शिष्य के गुण एवं कर्त्तव्यों का सुन्दर विवेचन हो रहा है। साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन की विवेचना एवं कायोत्सर्ग तथा प्रत्याख्यान के बारे में फरमा रहे हैं। दोपहर में साध्वी श्री सिद्धि श्री जी म.सा. के सान्निध्य में धार्मिक कक्षा चल रही है। शिविर के रूप में 32 आवश्यक सूत्र की समझाइश दी गई तत्पश्चात् संबंधित प्रश्नोत्तरी हुई। साध्वीवर्याओं के सान्निध्य में महिलाओं के पाँच दिवसीय ज्ञान आराधना शिविर में 25 क्रियाओं एव श्राविका के गुणों आदि के बारे में बताया गया। युवतियों का भी दो दिवसीय शिविर आयोजित हुआ।

एकासन, आयम्बिल, उपवास की लड़ियाँ चल रही हैं। बहिनें संवर आदि में भाग ले रही हैं। जैनेतर भाई भगवानदास जी साध ने 10 उपवास की तपस्या की। तीन जनों के एकान्तर तप चल रहा है। **–आशीष बुच्चा**

:: जयपुर-ब्यावर अंचल ::

ब्यावर। महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत जवाहर भवन में जयपुर-ब्यावर अंचल रियल रामेश रत्नम् प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रथम ग्रुप में 8 वर्ष के कम आयु के बच्चों ने भजन प्रतियोगिता में भाग लिया, जिसमें काशवी जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 8 से 13 आयु वर्ग में जैन त्यौहार, जैन धर्म, जैन इतिहास, साधु-साध्वियों की दिनचर्या, महावीर के तीर्थ एवं सभी

धर्मों के लौकिक पर्व सहित विभिन्न महापुरुषों की जीवनी आदि के बारे में बच्चों ने प्रस्तुति दी। इसमें प्रथम अयांश कांकरिया व द्वितीय नव्या कोठारी रहे। 13 से 18 आयु वर्ग में बच्चों ने मुँहपत्ती व अन्य धार्मिक सामग्रियों के कवर बनाए। इसमें नेहा खींचा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में दौलतराज जी तातेड़, मंजू जी सांड व ऊषा जी मोदी उपस्थित थे। श्री साधुमार्गी जैन संघ की ओर से अध्यक्ष जी ने सभी बच्चों को पुरस्कार प्रदान किये।

नवदीक्षित संत श्री उत्साह मुनि जी म.सा. का 32 दिवसीय संथारे सहित पण्डितमरण के समाचार प्राप्त होने पर शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन जवाहर भवन में किया गया। मुनि श्री जी ने फरमाया कि श्री उत्साह मुनि जी म.सा. ने अपना जीवन सार्थक कर लिया। हमें रोते जाना या महोत्सव के रूप में जाना है? इस पर चिन्तन अवश्य करें।

श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्री उत्साह मुनि जी म.सा. अपना जीवन आराधक व अणगार धर्म में जी गये। श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीवन सफल हो इसके लिए आलोचना पूर्वक संथारा ग्रहण करें। श्री उत्साह मुनि जी को संथारे में कई प्रकार के परीषह आए होंगे, लेकिन वे आत्म-समाधि में लीन हो गए। साध्वी श्री प्रेक्षा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि अंत समय जब निकट आता है तो हमारी भी भावना उत्साह मुनि जी की तरह बने। स्थानीय वक्ताओं ने भी गुणानुवाद सहित भावांजलि अर्पित की। सभा में 33 जनों ने 33 संवर के प्रत्याख्यान ग्रहण किये।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी गांधी के ब्यावर आगमन पर जवाहर भवन में श्री साधुमार्गी जैन संघ के अनेक गणमान्यजनों द्वारा भावभीना अभिनन्दन किया गया। प्रवचन पश्चात् श्री नरेन्द्र जी गांधी ने कहा कि हमारा दायित्व है कि हम गुरुवर के प्रत्येक विचार को उच्च स्थान दें। हम सभी छोटे-छोटे आयाम ग्रहण कर हमारी श्रद्धा-भक्ति बढ़ावें। आपने अत्र विराजित श्री नरेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5, शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवर जी म.सा. आदि ठाणा-9 सहित आपकी संसारपक्षीय सुपुत्री साध्वी श्री श्रुतिप्रज्ञा श्री जी म.सा. के दर्शन-वंदन का सौभाग्य प्राप्त किया।

-नोरतमल बाबेल

:: मालवा अंचल ::

इन्दौर। तीन दिवसीय समीक्षण ध्यान शिविर में उदयपुर से पधारे डॉ. सत्यनारायण जी शर्मा ने ध्यान, प्राणायाम, योग का प्रशिक्षण प्रदान कर मन की एकाग्रता कैसे बनाएँ, आत्म समाधि को कैसे प्राप्त करें आदि का सटीक विश्लेषण किया। आपने बताया कि प्राणशक्ति जितनी स्वस्थ और संतुलित होगी हमारा जीवन उतना ही शुद्ध बनेगा। शिविर से लगभग 150 लोग लाभान्वित हुए। समता भवन सुदामा नगर में शिविर का समापन हर्षोल्लास के साथ हुआ। **-रंजना सूर्या, आभा डूंगरवाल**

:: छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल ::

डौण्डी। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में जैन भवन में धर्म-ध्यान एवं तपाराधना का ठाठ लगा हुआ है। एकासन, उपवास की लड़ियाँ चल रही हैं। तप के क्रम में सुनीता जी बाघमार एवं पायल जी बाघमार ने 27 उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। प्रत्येक सोमवार को शिविर द्वारा नित नये विषयों पर चर्चा होती है। दिनांक 24 से 29 जुलाई तक पाँच दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। साध्वीवृन्द की नेश्राय में ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तप की उत्कृष्ट आराधना हो रही है। **-सुभाषचन्द जैन**

गीदम। शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में चातुर्मासिक धार्मिक कार्यक्रम अनवरत गतिमान हैं। आपश्री जी ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, कषाय, बारह भावना सहित अनेकानेक

विषयों पर मार्मिक प्रवचन धारा प्रवाहित कर रहे हैं। प्रवचनों से प्रभावित होकर लोग ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। वीर माता किरणदेवी बुरड़ ने दृढ़ आत्मबल का परिचय देते हुए 44 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किये एवं आगे बढ़ने के भाव हैं। इसके अलावा 15, 11, 9, 8 सहित अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। एकासन, बियासन, उपवास, अठाई एवं तेले की लड़ी चल रही है। अब तक 41 तेले सम्पन्न हो चुके हैं। रविवार को सामूहिक उपवास दिवस, एकासन दिवस, बियासन दिवस, आयंबिल दिवस आदि के रूप में सम्पन्न हो रहे हैं। उपवास में जैन-जैनेतर सभी की उपस्थिति रहती है।

प्रतिदिन दोपहर में महिलाएँ ज्ञान-ध्यान सीख रही हैं एवं पुरुष जिज्ञासा समाधान में सटीक समाधान पाकर धर्म की ओर उन्मुख हो रहे हैं। प्रत्येक शनिवार को ज्ञानवर्धक प्रश्न-पत्र एवं रविवार को बच्चों की कक्षा होती हैं। रात्रि संवर में गुरुभक्त बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। चातुर्मास को सफल बनाने हेतु सभी का सराहनीय योगदान मिल रहा है। **-धनराज लोढ़ा**

:: महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ::

अमरावती। संथारा साधक श्री उत्साह मुनि जी म.सा. के 32 दिवसीय संथारे सहित पण्डितमरण के समाचार ज्ञात होने पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। अनेक वक्ताओं ने भावांजलि देकर दिवंगत आत्मा के परम लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रार्थना की। अंत में 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया। **-सुरेशचंद मुनोत**

निफाड। शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 जैन स्थानक में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं। आपश्री जी के सान्निध्य में धर्म-ध्यान, त्याग-तप का ठाठ लगा हुआ है। प्रतिक्रमण, संवर, पौषध, एकासन, आयंबिल, तेला एवं अन्य बड़ी तपस्याएँ उत्साहपूर्वक गतिमान हैं। प्रात: प्रार्थना पश्चात् साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. युवाओं की धार्मिक कक्षा में ज्ञानार्जन करा रहे हैं। प्रवचन सभा में साध्वी श्री सुपद्म श्री जी म.सा. सुखविपाक सूत्र एवं साध्वी श्री सुदक्षा श्री जी म.सा. औपपातिक सूत्र पर प्रवचन फरमा रहे हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. परदेशी राजा के जीवन चारित्र का दिग्दर्शन करा रहे हैं। तप के क्रम में एकान्तर उपवास, 20 एकासन के मासखमण, 20 परदेशी राजा का तप, 16 तेले, रंगीन मासखमण आदि तप सम्पन्न हो चुके हैं।

साध्वी श्री सुवास श्री जी म.सा. के 5 तेले सम्पन्न हुए। महावीर जी अलीझाड़, शीतल जी दूधेड़िया के 15 उपवास, कु. खुशबू जी सुराणा के 9 उपवास के प्रत्याख्यान हुए। आयंबिल एवं तेले की लड़ी, वर्णमाला तप, चन्द्रकला तप, तीर्थंकर तिथी तप, भद्रोत्तर तप, सरप्राईज एकासन सहित अनेक तपस्याएँ चल रही हैं। प्रवचन के पश्चात् आयोजित कक्षाओं में दशाश्रुत-स्कंध की वाचनी, सामायिक, प्रतिक्रमण, थोकड़े, दशवैकालिक सूत्र एवं विविध प्रतियोगिताएँ चल रही हैं। एक माह में बहिनों के लगभग 120 एवं भाइयों में लगभग 100 रात्रि संवर व पौषध हुए। बच्चों में भी सामायिक, प्रतिक्रमण सीखने हेतु अच्छा उत्साह है। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भ्रूणहत्या नहीं करने का संकल्प म.सा. के मुखारविन्द से लिया। **-अशोक कर्नावट**

श्रमणोपासक

“

यदि शरीर की वेदना से कोई पीड़ित हो, डॉक्टरों ने भी हाथ खींच लिए हो तो उसके लिए बहुत उत्तम उपाय है कि तन भाव से वह उपरत हो जाए। आत्मलीन हो जाए। देह भाव से उपरत हो जाने से अनाथी मुनि, नमि राजर्षि आदि की पीड़ा कुछ क्षणों में ही शांत हो गई थी।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.

श्रुत उपवन का शुभारम्भ

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर 3 जुलाई 2023 को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की नीमच में आयोजित कार्यकारिणी सभा में '**श्रुत उपवन**' का मंगलमय लोकार्पण संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, संघ पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों एवं प्रवृत्ति संयोजकों सहित सम्माननीय शिखर सदस्यों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का फरमाना है कि संघ के प्रत्येक श्रावक-श्राविका ज्ञानवान एवं क्रियावान हों, जिनसे परिपूरित संघ पर मैं गर्व कर सकूँ।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की सद्प्रेरणा से श्रुत श्रावकों की एक पीढ़ी तैयार करने हेतु संघ विभिन्न आयामों के साथ प्रयत्नशील है। ऐसे में श्रुत उपवन हर एक मन को पावन करने के लिए ज्ञान की गंगा लेकर उपस्थित हुआ है। श्रुत उपवन को जानने से पहले हम रत्नपुरी रतलाम में स्थित '**श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार**' के बारे ज्ञानकारी प्राप्त कर लें। श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार की स्थापना 6 जून 1973 को साधुमार्गी परम्परा के सप्तम् पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री गणेशलाल जी म.सा. की पावन स्मृति में हुई। यह वर्ष ज्ञान भण्डार का स्वर्ण जयन्ती (1973-2023) स्थापना वर्ष है। हमारे आचार्यों, साधु-साध्वियों एवं प्रबुद्ध श्रावक-श्राविकाओं के प्रबल पुरुषार्थ से ज्ञान का यह अखूट खजाना हमें प्राप्त हुआ है। आज श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार में लगभग 80 हजार पुस्तकों का विशाल भण्डार है। इनमें से लगभग 10 हजार बेशकीमती हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ भी संग्रहित हैं।

हम सभी के लिए गर्व का विषय है कि चलते प्रवचन में साधु जीवन अंगीकार करने वाले मालव रत्न श्री श्रीचंद जी म.सा. (सांसारिक नाम श्री श्रीचंद जी कोठारी, रतलाम) ने न सिर्फ इस भण्डार की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई अपितु लम्बे समय तक इसके संयोजक के रूप में सेवाएँ दी। इसी क्रम में श्री रिखबचंद जी कटारिया, श्री पूनमचंद जी घोटा एवं श्री सुशील जी गोरेचा के संयोजकत्व में ज्ञान भण्डार उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहा। इस ज्ञान भण्डार में सभी पुस्तकें पूर्ण

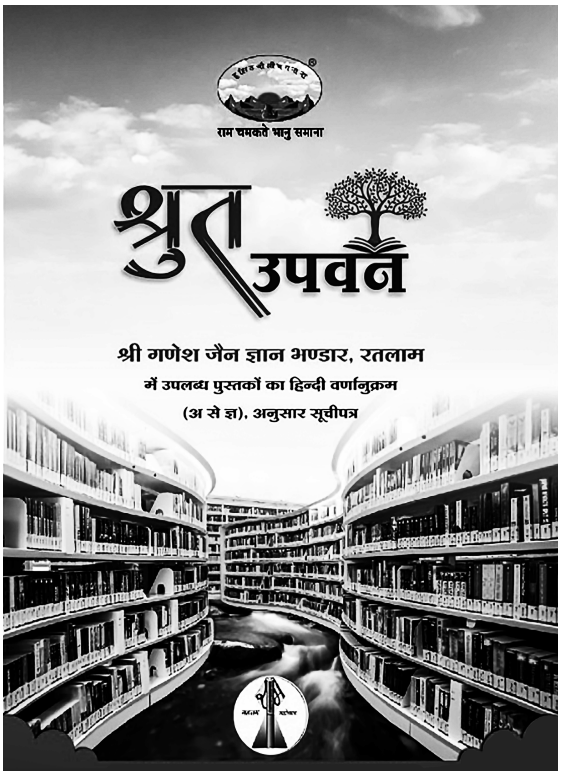

व्यवस्थित रूप से कवर, नम्बरिंग एवं विषयानुसार संग्रहित व सुरक्षित हैं।

हमारे संघ के दूरदर्शी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गौतम जी रांका एवं पदाधिकारियों ने दिसम्बर 2021 में संघ प्रवास के दौरान रतलाम के श्रावकों के साथ बैठक आयोजित की, जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने ज्ञान भण्डार को अधिक उपयोगी बनाने की आवश्यकता जताई। इस पर

रतलाम के श्री प्रकाश जी बोहरा ने इसे वर्तमान युग के अनुसार डिजिटलाईज करने का सुझाव दिया। सभी ने उनके सुझाव को मान्यता देते हुए इस हेतु सार्थक भूमिका निभाने का उनसे आग्रह किया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर इस ज्ञान भण्डार के प्रोजेक्ट कायाकल्प का शुभारंभ किया।

प्रोजेक्ट '**कायाकल्प**' के अन्तर्गत ज्ञान भण्डार में उपलब्ध सभी पुस्तकों की नम्बरिंग एवं विषय आदि यथावत् रखते हुए पुस्तकों की सूचियों को सुगम हिन्दी भाषा में कम्प्यूटर में संग्रहित किया गया। सूचियाँ तैयार होने के बाद इसे वर्णानुक्रम में रखते हुए सुगम क्रम सूची तैयार की। यहाँ विचार इस बात पर भी गया कि जो लोग कम्प्यूटर या मोबाइल उपयोग नहीं करते हैं वे ज्ञान की इस गंगा का लाभ कैसे उठा पाएँगे? तब महापुरुषों की सद्प्रेरणा से '**श्रुत उपवन**' की परिकल्पना ने आकार लिया और प्रयोग स्वरूप 11 संघों को श्रुत उपवन उपलब्ध कराने का निर्णय किया गया।

पुस्तकों के वर्णानुक्रम (अ से ज्ञ) सूची में पुस्तक के विषय की जानकारी के लिए क्रम के साथ प्रिफिक्स (ए-जेड) लगाया गया है। इसी के साथ लेखक का नाम भी सूची में शामिल किया गया है। इस सारी जानकारी से पुस्तक के विषय एवं एक ही विषय पर विभिन्न लेखकों की जानकारी सहज ही उपलब्ध हो सकेगी।

प्रोजेक्ट कायाकल्प के अगले चरण में एक ऐप एवं वेबसाइट के माध्यम से सूची लोकार्पित की जाएगी तथा कुछ चुनिन्दा पुस्तकें वेबसाइट पर उपलब्ध करवाई जाएगी। श्रुत उपवन का लक्ष्य ज्ञान के खजाने को अधिकतम उपयोगी बनाना है। देशभर के सभी श्रावक-श्राविकाएँ इसका लाभ उठाकर आराध्यदेव आचार्य श्री रामेश के स्वप्न को साकार करते हुए ज्ञानवान एवं क्रियावान बनकर महत्तम महोत्सव के अवसर पर गुरुचरणों में अनुपम भेंट समर्पित करें।

श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आवश्यकता

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, केन्द्रीय कार्यालय- समता भवन, बीकानेर द्वारा उदयपुर में संचालित आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र एवं श्री गणेश जैन छात्रावास हेतु एक प्रशासनिक अधिकारी की शीघ्र आवश्यकता है। आवेदक संबंधित क्षेत्र में अनुभवी, सौम्य, शान्त स्वभावी, कार्यालय एवं लेखा संबंधी ज्ञान में दक्ष, पत्र व्यवहार में निपुण एवं छात्रों पर नियंत्रण व मार्गदर्शन करने वाला होना चाहिए।

कम्प्यूटर का सामान्य ज्ञान अनिवार्य है। जैन व धार्मिक योग्यता रखने वाले को प्राथमिकता दी जाएगी। 65 वर्ष से कम आयु वाले ही आवेदन करें। वेतन योग्यतानुसार।

कृपया अपना CV ईमेल से ganeshjainch@sadhumargi.com पर एवं डाक से नीचे उल्लेखित पते पर भिजवा सकते हैं -

संयोजक, आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र
राणा प्रताप नगर, रेलवे स्टेशन के पास,
ओस्तवाल प्लाजा के सामने, उदयपुर-313001 (राज.)

दो दिवसीय आवासीय व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम आयोजित

नीमच, 5-6 अगस्त 2023। साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम (SPF) द्वारा दो दिवसीय आवासीय व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम Enrichment & Enlightenment : E^2 का आयोजन किया गया। व्यक्तित्व विकास पर आधारित इस कार्यक्रम में देशभर से 100 से अधिक विविध प्रोफेशनल्स ने सहभागिता निभाई। कार्यक्रम में चारित्रात्माओं की पावन वाणी में प्रवचन एवं आशीर्वचन पश्चात् विभिन्न शहरों से पधारे मोटिवेशनल स्पीकर्स- प्रवीणा जी सेठिया, प्रीति जी जैन, सी.ए. प्रियंका जी जैन, लीला जी कोठारी तथा डॉ. नितिन जी तातेड़ द्वारा धैर्य और दृढ़ता, एक्स फेक्टर, डिजाइन योर डेस्टिनी, पब्लिक स्पीकिंग एंड इफेक्टिव नेटवर्किंग, खुद को डवलप करना, विपरीत परिस्थितियों में प्रबंधन और भावनात्मक स्थिरता आदि विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने प्रोफेशनलिज्म के साथ होलिस्टीक डवलपमेंट विषय पर प्रेरणादायी उद्बोधन दिया।

इस आयोजन में परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा प्रतिभागियों को आगामी संवत्सरी से पूर्व श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की 5 गाथाएँ सीखने का संकल्प प्रदान किया गया, जो कि विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। तत्पश्चात् उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. द्वारा प्रोफेशनल्स को नेतृत्व और इसके महत्त्व पर विस्तृत उद्बोधन दिया गया।

यह दो दिवसीय आयोजन आध्यात्मिकता व व्यावसायिकता के बेजोड़ संगम के रूप में परिलक्षित हुआ। यह कार्यक्रम प्रोफेशनल्स एवं श्रीसंघ के बीच परस्पर संबंध सेतु निर्माण का माध्यम बना, जो कि साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम का लक्ष्य है।

-संयोजक

श्रमणोपासक

रीयल रामेश रत्नम् लेवल-2 प्रतियोगिता सम्पन्न

रीयल रामेश रत्नम् (RRR) प्रतियोगिता के आंचलिक स्तरीय द्वितीय लेवल का आयोजन 29 जुलाई 2023 को देशभर के विभिन्न संघों में किया गया। इसमें प्रथम लेवल के चयनित विजेताओं ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। यह प्रतियोगिता तीन आयु वर्ग में आयोजित हुई, जिसमें 8 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए भजन गायन, 8 से 13 वर्ष के बच्चों के लिए प्रथम विकल्प में तीर्थंकरों के जीवनवृत्त का मंचन एवं विकल्प दो में मुँहपत्ती का कवर बनाना तथा 13 वर्ष से अधिक आयु के प्रतिभागियों के लिए पॉवर पॉइण्ट प्रेजेन्टेशन पर प्रस्तुतिकरण रखा गया।

इन तीनों ग्रुप में 10 अंचलों के करीब 300 बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के सफलतम आयोजन हेतु आयोजकों, प्रभारियों, स्थानीय पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने पूर्ण मनोयोग के साथ सेवा कार्य किया। प्रतिभागियों में काफी उत्साह देखा गया। अंचलों से कार्यक्रम के वीडियो एवं फोटोग्राफ्स प्राप्त हुए। प्रत्येक प्रतिभागी को पुरस्कार स्वरूप 500/- रुपये एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। पाठशाला संयोजक द्वारा सभी का आभार ज्ञापित किया गया।

विजेता इस प्रकार रहे- **मेवाड़ अंचल-** सलोनी सुराणा, सतखण्डा, रिया नागौरी, उदयपुर, भवी पटवारी, चित्तौड़गढ़; **बीकानेर-मारवाड़ अंचल-** नलिन जैन, हार्दिक पुगलिया, गंगाशहर, पर्व जैन, जोधपुर; **जयपुर-ब्यावर अंचल-** कशवी जैन, सवाई माधोपुर, अयांश कांकरिया, नेहा खीचा, ब्यावर; **मालवा अंचल-** पार्श्व जैन, लव्या जैन, इन्दौर, आगम रांका, खिरकिया; **छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल-** द्रिति ओस्तवाल, राजनांदगाँव, कार्वि बरड़िया, खरियार रोड, नियति धारीवाल, रायपुर; **कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल-** दियान जैन, आर्य जैन, युवराज गुरलिया, बेंगलुरु; **तमिलनाडु अंचल-** लक्ष्य, मदुरांतकम्, मनन कांकरिया, चेन्नई, महक सर्राफ, मदुरांतकम्; **मुम्बई-गुजरात अंचल-** आयुष पिपाड़ा, आरूष पगारिया, सूरत, काव्या बरड़िया, अहमदाबाद; **महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल-** नैतिक कोठारी, शिरपुर, लयशा जामद, नागपुर, अंशु बोहरा, अक्कलकुआ; **पूर्वोत्तर अंचल-** मनन्या बेताला, भाविक संचेती, निधि बोथरा, गुवाहाटी इत्यादि विजेता रहे। RRR का फाइनल चरण संघ समर्पणा महोत्सव (संघ अधिवेशन) के अवसर पर आयोजित होगा।

-संयोजक श्रमणोपासक

तत्काल निर्णय

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

परिस्थितियाँ अनुकूल हो चाहे प्रतिकूल, व्यक्ति को संभलकर रहना चाहिए। आज की अनुकूल परिस्थितियाँ कल प्रतिकूल रूप धारण कर सकती हैं। वहीं प्रतिकूल लगने वाली अवस्थाएँ, परिस्थितियाँ समय पाकर अनुकूल भी हो सकती हैं। अतः परिस्थिति के आधार पर व्यक्ति को तत्काल निर्णायक मानस नहीं बनाना चाहिए, बल्कि परिस्थितियों का धैर्य व तटस्थ भाव से अध्ययन करते रहना चाहिए।

साभार- नीरव का रव

विविध भेंट मार्फत

01 जुलाई से 31 जुलाई 2023

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट प्रदान की जाती है, जिससे विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है-

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

11,00,000/- अनिल जी सिपानी, बेंगलुरु

2,40,000/- कमलचन्द जी बैद, मुम्बई

2,20,000/- विमलचंद जी सुराणा, गीदम

2,20,000/- सुन्दरबाई कोटड़िया, कोण्डागाँव

79,000/- सुंदरलाल जी पींचा, नोखा/गुवाहाटी

20,000/- पांचीदेवी सुराणा, गीदम

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

4,00,000/- पुखराज जी अमित जी पीयूष जी निश्चय जी बोथरा, अलाय/अहमदाबाद

51,000/- मनोज कुमार जी मुकेश कुमार जी डागा, कोलकाता

31,000/- यशवंत जी विनीत जी नपावलिया, बेंगलुरु

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

11,00,000/- महेंद्र जी शांतिलाल जी मुकीम, रायपुर

2,50,000/- मोहनीदेवी छल्लाणी परिवार, गंगाशहर/दुबई

2,00,000/- शांतिलाल जी गौतम जी सम्पत जी रांका, जयनगर/मुंबई

2,00,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु

1,00,000/- सूरजदेवी मूलचंद जी कोटड़िया, कोरबा

50,000/- नथमल जी जसकरण जी तातेड़, करीमगंज

25,000/- राजकुमार जी नाहर, जयपुर

25,000/- मनोज कुमार जी मुकेश कुमार जी डागा, कोलकाता

21,000/- निखिल जी डागा, रायपुर

श्रमणोपासक भेंट

87,500/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु

5,700/- मनोहरीदेवी झंवरलाल जी भूरा, जलगाँव (57वीं सालगिरह के उपलक्ष में)

5,000/- नन्दकुमार जी विकास जी मनोज जी बैद, गढचिरोली, रेलगाँव, नागपुर (रतनलाल जी-तुलसीबाई बैद के स्वर्ण सीढ़ी आरोहण के उपलक्ष में)

5,000/- ताराबाई महावीर जी कोठारी होलेनरसिपुर (चि. आशीष कोठारी के गोद ग्रहण के उपलक्ष में)

3,100/- धर्मचन्द जी अरविंद कुमार जी खिंवसरा बाबरावाले, ब्यावर (मल्लिका (लवि) के विवाह के उपलक्ष में)

2,100/- राजमल जी सहलोत परिवार, निकुम्भ (श्रीमती सोहनबाई सहलोत की पावन स्मृति में)

1,100/- हस्तीमलजी छाजेड़ परिवार, निम्बाहेड़ा (श्री निलेश जी छाजेड़ की पुण्यस्मृति में)

1,100/- महेन्द्र कुमार जी नितेश कुमार जी जैन, चौथ का बरवाड़ा (नितेश जी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष में)

500/- चम्पालाल जी आंचलिया, देशनोक (सुश्री रेखा के शुभविवाह के उपलक्ष में)

500/- कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

समता जनकल्याण प्रन्यास (सौजन्य से प्राप्त)

1,00,000/- शांतिलाल जी गौतम जी सम्पत जी रांका, जयनगर/मुंबई

51,000/- सुन्दरलाल जी महेन्द्र जी पींचा, नोखा/गुवाहाटी (श्रीमती मानादेवी एवं श्री तुलसीराम जी पींचा की पुण्यस्मृति में)

50,000/- गुप्तदान

दानपेटी योजना

11,000/- पुष्पाबाई फूलचंद जी डोशी, डौण्डीलोहारा

8,800/- नरेंद्र कुमार जी जवरीलाल जी रुणवाल, दोंडाईचा

2,200/- अशोक कुमार जी भटेवरा, दलौदा

2,100/- मदनलाल जी पन्नालाल जी भंडारी, दोंडाईचा

2,000/- लूणकरन जी छगनलाल जी सेठिया, तुफानगंज

1,530/- जीवनलाल जी रातड़िया, दलौदा

1,500/- यशवंत जी जैन, दलौदा

1,500/- अनिल कुमार जी भंडारी, दलौदा

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- शांतिलाल जी पन्नालाल जी भंडारी, दोंडाईचा, रमेशचंद जी उत्तमचंद जी चतुरमूथा, दोंडाईचा, महेंद्र कुमार जी रविन्द्र कुमार जी कोटड़िया, दोंडाईचा, विकास कुमार जी कांतिलाल जी छाजेड़, दोंडाईचा, राजमल जी सूरजमल जी बिनायकिया, दोंडाईचा

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री विमल कुमार जी आनन्दीलाल जी पितलिया, दलौदा, अरविंद कुमार जी मेहता, दलौदा, सुशील कुमार जी भंडारी, दलौदा, नंदलाल जी रातड़िया, दलौदा

इदं न मम (सौजन्य से प्राप्त)

5,00,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु

5,00,000/- विमला जी कमल जी सिपानी, बेंगलुरु

51,000/- गरिमा जी धर्मीचन्द जी रांका, विजयनगर

51,000/- गौतमचंद जी देरासरिया, मैसूर

50,000/- किशोर कुमार जी सेवंत कुमार जी बरड़िया, खरियार रोड

31,000/- लालचंद जी खिंदावत, बेंगलुरु

25,000/- ताराबाई महावीर जी कोठारी, होलेनरसिपुर

22,000/- दिलीप कुमार जी बांठिया, सिलापथार

21,000/- जैन फूड प्रोडक्ट, नोखा

21,000/- सुशील जी नंदावत, मैसूर

21,000/- मोहिनीदेवी सांड, करीमगंज

21,000/- अनिलचंद जी अरिहंत जी कोठारी, चेन्नई

21000/- मनोज कुमार जी मुकेश कुमार जी डागा, कोलकाता

21,000/- प्रदीप कुमार जी सेठिया, कोलकाता

20,400/- दिलीपचंद जी सुराणा, लालाबाजार

11,111/- सूरजमल जी इंद्रादेवी पारख, करीमगंज

11,000/- लोकेश कुमार जी सिंघवी, सिरकाली

11,000/- मालचंद जी लालानी, बिलासीपाड़ा

11,000/- भंवरलाल जी लुणावत, बिलासीपाड़ा

11,000/- संतोकचंद जी आंचलिया, बिलासीपाड़ा

11,000/- उत्तमचंद जी बोथरा, पथारकांदी

11,000/- दिनेश जी ललवानी, करीमगंज

11,000/- शांतिदेवी पटवा, करीमगंज

11,000/- जयचंदलाल जी भूरा, करीमगंज

11,000/- निर्मल कुमार जी भूरा, करीमगंज

11,000/- निहालचंद जी कोठारी, चेन्नई

11,000/- अमृतलाल जी सुशीलादेवी चौधरी, जावद

11,000/- किरणदेवी खैरोदिया, उदयपुर

11,000/- सुरेंद्र कुमार जी सांड, हावड़ा

10,500/- नेमचंद जी मांगीलाल जी आंचलिया, सिलापथार

10,300/- प्रकाशचंद जी सुराना, सिलचर

5,400/- कमल कुमार जी पिरोदिया, रतलाम

5,400/- किरणदेवी पिरोदिया, रतलाम

5,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- गुप्तदान, नोखा, रेखचंद जी कांकरिया, नोखा, प्राचीश्री परिवार, बदनावर, विजय कुमार जी सांड, सिलचर, मनोज कुमार जी चौरड़िया, बिलासीपाड़ा, कमलचंद जी संचेती, सिलापथार, अमित जी भूरा, करीमगंज, विनय कुमार जी बोथरा, पथारकांदी, धनराज जी श्यामसुखा, पथारकांदी, प्रेमचंद जी बोथरा, पथारकांदी, संजय कुमार जी भूपेश कुमार जी सेठिया, हावड़ा, लीलादेवी मरोठी, हावड़ा, विनीत कुमार जी आंचलिया, हावड़ा

5,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– अनिल कुमार जी लुनिया, बदनावर, मदनसिंह जी मेहता, रतलाम, किरणदेवी मेहता, रतलाम, राजेश कुमार जी भूरा, करीमगंज, सुरेंद्र कुमार जी बक्सी, करीमगंज, शांतिलाल जी पन्नालाल जी भंडारी, दोंडाईचा

3,500/– विजयसिंह जी प्रवीण जी सेठिया, गंगाशहर

3,300/– नोरतमल जी बाबेल, ब्यावर

3,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सुंदरलाल जी सिपानी, गुवाहाटी, संदीप जी लोढा, डोंगरगाँव, जतनलाल जी भूरा, लालाबाजार, मुकेश जी डागा, सिलापथार, जेठमल जी राजेश जी डागा, सिलापथार, अभय कुमार जी बच्छावत, करीमगंज, ललित कुमार जी भूरा, करीमगंज, सुजीत जी बोथरा, पथारकांदी, शुभकरन जी बोथरा, पथारकांदी

2,700/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– रतलाम से– अभिषेक जी पिरोदिया, संदाली जी पिरोदिया, विपुल जी पिरोदिया, अक्षिता जी पिरोदिया

2,500/– इंद्रचंद जी मालू, सिलापथार

2,500/– हनुमानमल जी सोनावत, सिलापथार

2,340/– विजय कुमार जी संजय कुमार जी बाफना, बदनावर

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– राजेंद्र कुमार जी सुराणा, नोखा, उत्तमचंद जी बेताला, नोखा, सरितादेवी सुराणा, नोखा, राजश्री जी सुराणा, नोखा, बालरतन जी जागृत जी सुराणा, नोखा, अभिलाषा जी चौरड़िया, नई दिल्ली, ओमप्रकाश जी लुणावत, बिलासीपाड़ा, पवन कुमार जी लुणावत, बिलासीपाड़ा, अशोक जी बोथरा, बिलासीपाड़ा, श्रीचंद जी भूरा, कोकराझाड़, धरमचंद जी बरड़िया, कोकराझाड़, जेठमल जी बांठिया, कोकराझाड़, शांतिदेवी आंचलिया, कोकराझाड़, कंचनदेवी बोथरा, बरपेटा, श्यामसुंदर जी चौरड़िया, बिलासीपाड़ा, करनीदान जी बोथरा, बिलासीपाड़ा, मेघराज जी कमल जी मालू, सिलापथार, भंवरीदेवी प्रदीप जी बिनोद जी सेठिया, कोलकाता, राजेंद्र कुमार जी कोठारी, हावड़ा, लोकेश जी भंडारी, हावड़ा, मदनलाल जी पन्नालाल जी भंडारी दोंडाईचा, जीवनलाल जी सागरमल जी गोखरु, कानवन

1,500/– गौतमचंद जी बैद, नोखा

1,500/– मंजूदेवी पींचा, कोकराझाड़

1,500/– दिलीप कुमार जी बोथरा, हावड़ा

1,400/– जेठमल जी रांका, लालाबाजार

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– बालरतन जी जयंत जी सुराणा, नोखा, रविकुमार जी सुनील कुमार जी पंवार, बदनावर, प्रकाशचंद जी बाफना, बदनावर, कमलचंद जी पोखरना, बदनावर, अशोक कुमार जी कांतिलाल जी चौरड़िया, बदनावर, रिंकेश कुमार जी मुन्नालाल जी पंवार, बदनावर, राजेंद्र कुमार जी चांदमल जी जैन, बदनावर, सुरेश कुमार जी चौरड़िया, बिलासीपाड़ा, राजकुमार जी भूरा, बिलासीपाड़ा, हुलासमल जी बोथरा, बिलासीपाड़ा, प्रकाश जी मुणोत, बिलासीपाड़ा, मुकेश जी चौरड़िया, बिलासीपाड़ा, घेवरचन्द जी प्रकाशमल जी लुणावत, बिलासीपाड़ा, हनुमानमल जी लुणावत, बिलासीपाड़ा, चंपालाल जी चौरड़िया, बिलासीपाड़ा, राकेश जी बरड़िया, कोकराझाड़, सुभाष जी नवलखा, कोकराझाड़, जयचंदलाल जी मनोज कुमार जी भूरा, कोकराझाड़, सुरेंद्र कुमार जी भूरा, कोकराझाड़, जेठमल जी बांठिया, कोकराझाड़, सुरेंद्र कुमार जी बांठिया, बरपेटा, पानमल जी बोथरा, हवली, मनोज कुमार जी श्रीश्रीमाल, हवली, निर्मल कुमार जी चौरड़िया बिलासीपाड़ा, जतनलाल जी राजेश जी मालू, सिलापथार, पारसमल जी वीरेंद्र कुमार जी सोनावत, भीनासर, अभिलाषा जी जैन, दिल्ली, चंद्रेश जी अशोक जी काकलिया, धुलिया, रमेशचंद जी उत्तमचंद जी चतुरमूथा दोंडाईचा, नरेंद्र कुमार जी जवरीलाल जी रूणवाल दोंडाईचा, महेंद्र कुमार जी रवीन्द्र कुमार जी कोटड़िया, दोंडाईचा, विकास कुमार जी कांतिलाल जी छाजेड़, दोंडाईचा, राजमल जी सूरजमल जी बिनायकिया, दोंडाईचा, गुप्तदान, बसंतीलाल जी पंवार, कानवन

555/– कमलाबाई पुखराज चौपड़ा, सेलम्बा

501/– जीतेश जी जैन, दिल्ली

500/– प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल, बदनावर

500/- दिलीप कुमार जी नांदेचा, बदनावर
500/- हर्ष जी जैन, दिल्ली

जीवदया

16,500/- साधुमार्गी जैन संघ, गंगापुर
7,000/- मैनादेवी लालानी, बरपेटा
5,000/- गुप्तदान
5,000/- डॉ. विनोद जी जैन, पिपलियामंडी
3,100/- रमेशचंद जी हैडसाब, मंदसौर
2,400/- भंवरीदेवी प्रदीप जी बिनोद जी सेठिया, कोलकाता
2,100/- कमलचन्द जी झंवरीदेवी सिपानी, गंगाशहर (शादी की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में)
2,100/- मदनलाल जी पन्नालाल जी भंडारी, दोंडाईचा (श्री अशोक मुनि जी म.सा. की पुण्यस्मृति में)
2,100/- दिलीप कुमार जी जैन, उदयपुर
2,100/- कन्हैयालाल जी बाफना, लखनपुरी
2,005/- प्राचीश्री परिवार, बदनावर
1,500/- संतोषदेवी सेठिया, तुफानगंज
1,500/- निर्मला जी कांतिलाल जी लोढ़ा, राहुरी फैक्ट्री
1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- चम्पालाल जी आंचलिया, देशनोक (श्रीमती अणचीदेवी लुनकरण जी आंचलिया की पुण्यस्मृति में), कार्तिक कुमार जी सुरेंद्र कुमार जी पारख, बीकानेर (श्री जेठमल जी पारख की 40वीं पुण्यतिथि पर), समुंदर सिंह जी प्रवीण कुमार जी सिंघवी, निंबाहेड़ा, अमृतलाल जी सुशीलादेवी चौधरी, जावद, मोनालिसा जी जैन, रायपुर, नरेंद्र कुमार जी जवरीलाल जी रूणवाल, दोंडाईचा, लाडदेवी उत्तमचंद जी कोठारी, चेन्नई
1,000/- ज्ञानीदेवी भंवरलाल जी कोठारी, भीलवाड़ा
911/- सुधा जी सुनील जी जैन, नगरी
600/- कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग (सौजन्य से प्राप्त)

1,00,000/- भोजराज जी सेठिया, दिनहट्टा
51,000/- अनिलचंद जी अरिहंत जी कोठारी, चेन्नई
3,000/- मैनादेवी लालानी बरपेटा रोड
2,000/- प्राचीश्री परिवार, बदनावर

समता मिति योजना

5,000/- नरेन्द्रकुमार जी जवरीलाल जी रूणवाल, दोंडाईचा (श्री जवरीलाल जी किशनलाल जी रूणवाल की पुण्यस्मृति में)

समता प्रचार संघ

76,667/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु
51,000/- गुप्तदान

समता संस्कार पाठशाला

5,000/- मनीष कुमार जी मेड़तवाल, मुम्बई (श्री धर्मीचन्द जी मेड़तवाल की पुण्यस्मृति में)
501/- मोनालिसा जी जैन, रायपुर

समता सरिता सेवा/विहार सेवा

11,000/- अनिलचंद जी अरिहंत जी कोठारी, चेन्नई
11,000/- संगिनी जैन महिला मंडल, बेंगलुरु
5,100/- ताराचंद जी धीरज कुमार जी सुराणा, सूरत
5,000/- मनीष कुमार जी मेड़तवाल, मुम्बई (श्री धर्मीचन्द जी मेड़तवाल की पुण्यस्मृति में)
5,000/- डॉ. विनोद जी जैन, पिपलियामंडी
2,500/- भंवरीदेवी प्रदीप जी बिनोद जी सेठिया, कोलकाता
2,100/- लाडदेवी, पुत्र मोहित जी कोठारी, चेन्नई
2,100/- चमेलीदेवी पारख, राजनादगांव
2,100/- साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, कानवन
1,100/- अशोक कुमार जी संकलेचा, भोपाल
500/- आशादेवी मेहता, उदयपुर
500/- मंजूदेवी कोठारी, भीण्डर
500/- डॉ. आलोक जी मेहता, मंदसौर

साहित्य स्टॉल अनुदान

5,000/- निहालचंद जी कोठारी, चेन्नई
4,000/- ताराचंद जी धीरज कुमार जी सुराणा, सूरत
2,100/- सुशीलाबाई गुरलीया, बेंगलुरु
2,000/- धन जी सुरेश जी जैन, कोटा

संघ सहयोग

51,000/- मगनमल जी संचेती, सिलापथार

11,000/- ज्ञानादेवी भूरा, करीमगंज

विहार सेवा संयोजन सदस्यता

99,000/- ताराबाई महावीर जी कोठारी, होलेनरसिपुर (चि. आशीष कोठारी के गोद ग्रहण के उपलक्ष में)

छात्रवृत्ति (महिला समिति)

1,100/- मंजूदेवी कोठारी, चेन्नई

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

1,00,000/- उर्मिलादेवी सुंदरलाल जी सिपानी, गुवाहाटी

2,100/- जवाहरलाल जी बसंतीदेवी नाहटा, बरपेटा रोड

1,000/- प्राचीश्री परिवार, बदनावर

500/- अंजनादेवी पोखरना, बेगूँ

व्यसनमुक्ति कार्यक्रम (युवा संघ)

5,000/- मनीष कुमार जी मेड़तवाल, मुम्बई (श्री धर्मीचन्द जी मेड़तवाल की पुण्यस्मृति में)

विशेष :

साहित्य आजीवन सदस्यता-10, युवा संघ सदस्यता-23, श्रमणोपासक सदस्यता-15

01 अप्रैल 2023 से 31 जुलाई 2023 तक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्त्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केन्द्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नम्बर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
12.04.23	501/-	UPI विपुल जैन
12.04.23	10,100/-	UPI नेहा जैन
20.04.23	5,000/-	UPI अशोक कुमार बृज
22.04.23	1,101/-	UPI सिंपल जैन
08.05.23	3,500/-	UPI राहुल
12.05.23	501/-	UPI विपुल जैन
22.05.23	1,000/-	UPI विनोद बम्ब
31.05.23	1,100/-	UPI निखिल
02.06.23	5,000/-	UPI आशिता जैन
12.06.23	501/-	UPI विपुल जैन
25.06.23	11,000/-	UPI अविनाश ललवानी
03.07.23	501/-	UPI अर्जुन खत्री
03.07.23	12,700/-	नकद
04.07.23	9,700/-	नकद
04.07.23	8,600/-	नकद
06.07.23	5,100/-	नकद
06.07.23	3,000/-	नकद
20.07.23	50,000/-	Ch. No. 893708
20.07.23	1,000/-	UPI पिंकू
26.07.23	1,000/-	UPI प्रियंका
27.07.23	2,000/-	UPI आशीष
ए.यू. बैंक		
07.06.23	1,000/-	UPI के. सुहानी

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेन्द्र!

भूख से कम खाना। रात को जल्दी सोना। सुबह जल्दी उठना। अध्यात्म चिंतन। सात्विक भावना को बल इत्यादि प्रसंग दैनिक कार्यक्रम में यदि समावेशित होते हैं तो शारीरिक बीमारियाँ शमित होती हैं। मन की पवित्रता बढ़ती है।

- आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

विनम्र श्रद्धांजलि

सूरत। बीकानेर निवासी सूरत प्रवासी सुश्रावक सुंदरलाल जी पुत्र स्वर्गीय श्री मगनमल जी सेठिया का 90 वर्ष की

आयु में 24 जून को देहावसान हो गया। आपका जीवन अत्यंत सादगीपूर्ण था। आप सरल स्वभावी, मधुरभाषी और व्यवहार कुशल थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

रायपुर। सुश्रावक मोतीलाल जी सुपुत्र श्री घेवरचंद जी मुकीम का 3 जुलाई को निधन हो गया। आपके

पारिवारिकजनों ने आपकी अंतिम इच्छानुसार देहदान किया। आप हँसमुख, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा व समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

गंगाशहर। सुश्राविका सुशीलादेवी धर्मपत्नी श्री हनुमानमल जी भूरा का 4 जुलाई को शुद्ध आत्मभावों के साथ

निधन हो गया। आप अत्यन्त ही सरल स्वभावी, मिलनसार एवं धर्म-ध्यान में अग्रणी रहने वाली महिला थीं। परम पूज्य आचार्य श्री नानेश-रामेश की प्रति आपकी अगाध श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

नोखा। नेत्रदानी सुश्रावक शंकरलाल जी सुपुत्र श्री चिमनीराम जी भूरा का 8 जुलाई को 83 वर्ष की आयु में

निधन हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभावी, धार्मिक प्रवृत्ति के धनी थे। आपका जीवन आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश के सिद्धांतों से प्रेरित था। आपने अपने जीवन में गौसेवा को विशेष महत्त्व दिया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

निकुम्भ। सुश्राविका सोहनबाई धर्मसहायिका राजमल जी सहलोत का 80 वर्ष की आयु में 22 जुलाई को

निधन हो गया। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा व आस्था थी। प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय का लक्ष्य रखती थी। आपने 15, 11, तेले, उपवास, आयंबिल आदि तप-त्याग किये। मरणोपरान्त आपके नेत्र दान किये गए। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

देशनोक। सुश्रावक प्रकाशचन्द जी सुपुत्र स्व. श्री दीपचन्द जी सुराणा का 24 जुलाई को देहावसान हो गया। आपने स्थानीय संघ में अनेक पदों पर सेवाएँ दी। चारित्रात्माओं की

सेवा में सदैव ही अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

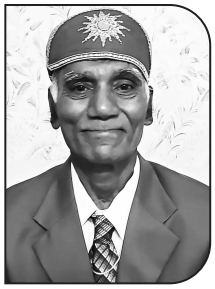

उदयपुर। सुश्रावक पारसमल जी सुपुत्र श्री सुजानमल जी नागौरी (बड़ीसादड़ी निवासी) का 71 वर्ष की आयु में 25 जुलाई को देहावसान हो गया। आप मृदुभाषी, सरल स्वभाव एवं मिलनसारिता के धनी थे। आपकी देव, गुरु, धर्म पर अटूट श्रद्धा थी। आपने अपने जीवनकाल में 4 मासखमण, 10 अठाई व अनेक तपस्याएँ कीं। आपने आचार्य श्री रामेश के उदयपुर चातुर्मास में एक ही आसन पर 101 सामायिक की ऐतिहासिक आराधना का कीर्तिमान स्थापित किया। आपके प्रतिदिन सामायिक का नियम था। आप साध्वी श्री पुष्पलता जी म.सा. के संसारपक्षीय बहनोई थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

श्रमणोपासक

नवदीक्षित संत श्री उत्साह मुनि जी म.सा. का 32 दिवसीय संथारा साधना सहित पण्डितमरण

धामणगाँव। शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा के आज्ञानुवर्ती नवदीक्षित संत श्री उत्साह मुनि जी म.सा. का 32 दिवसीय संलेखना संथारा सहित 3 अगस्त 2023 को प्रात: 5:22 बजे के लगभग पण्डितमरण हो गया। संयम अंगीकार करने के पश्चात् संथारा साधक नवदीक्षित संत श्री उत्साह मुनि जी म.सा. पूर्ण समभावों से शारीरिक वेदनाओं को सहन करते हुए आत्म-समाधि में लीन थे। इसी दिन प्रात: 11:30 बजे आपश्री जी की अन्तिम यात्रा जैन स्थानक से प्रारंभ होकर मोक्षधाम पहुँची। अन्तिम यात्रा में मार्ग के दोनों ओर हजारों लोगों ने आपश्री जी को श्रद्धासुमन अर्पित कर संथारे की अनुमोदना की। मोक्षधाम में श्री उत्साह मुनि जी म.सा. के संसारपक्षीय सुपुत्र भूपेन्द्र जी, रविन्द्र जी छाजेड़ एवं परिवार द्वारा अग्नि संस्कार किया गया।

आपश्री जी को शासन दीपक श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. द्वारा 2 जुलाई को तिविहार संथारे एवं 27 जुलाई को चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाए गए। तत्पश्चात् मुनिजन अग्लान भाव से सेवा कार्यों में लगे रहे। आपकी उच्च सेवा भावना की सभी ने अनुमोदना की।

4 अगस्त को प्रात: 9 बजे गुणानुवाद सभा के आयोजन में स्थानीय संघ अध्यक्ष, मंत्री सहित अनेक पदाधिकारियों एवं वरिष्ठजनों ने अपने भावों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया।

-विकास कुचेरिया

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड जून 2023, परीक्षा परिणाम

प्रारम्भिक जैन सिद्धांत भूषण

रोल नं. (भूषण 1/2/3/4- प्राप्तांक) 774 (1-100, 2-98, 3-94, 4-83), 759(1-60, 2-73, 3-61, 4-42), 746 (1-98, 2-95, 3-68), 740 (1-98), 771 (1-95), 775 (1-92), 770 (2-43), 713 (2-61, 3-41), 752 (3-85, 4-83), 761 (3-93), 773 (3-61)

प्रारम्भिक जैन सिद्धांत कोविद

रोल नं. (कोविद 1/2/3/4- प्राप्तांक) 753 (1-69, 2-78, 3-91, 4-94), 734 (1-73, 2-82, 3-83, 4-92), 582 (1-84, 3-92, 735 (1-71, 3-62, 4-65), 745 (1-92), 584 (1-66), 761 (1-83, 2-78, 4-72), 589 (2-72, 4-73), 634 (2-26, 4-29), 712 (2-28, 4-58), 741 (2-43), 692 (3-60), 478 (3-50, 4-59)

प्रारम्भिक जैन सिद्धांत विभाकर

रोल नं. (विभाकर 1/2/3/4- प्राप्तांक) 423 (2-55, 3-59, 4-53), 540 (2-50, 4-66), 582 (2-89, 4-64), 745 (2-83, 3-94, 4-95)

प्रारम्भिक जैन सिद्धांत मनीषी

रोल नं. (मनीषी 1/2/3/4- प्राप्तांक) 631 (1-47, 2-77, 3-70, 4-56), 147 (1-97, 3-85), 529 (2-87, 3-65)

प्रारम्भिक जैन सिद्धांत विशारद

रोल नं. (मनीषी 1/2/3/4- प्राप्तांक) 196 (1-85, 3-80, 4-75), 590 (1-87, 3-75, 4-76), 169 (2-62, 3-77), 494 (2-48)

वैकल्पिक जैन आगम कंठस्थ

रोल नं. (भूषण/विभाकर- प्राप्तांक) 735 (76), 745 (84), विभाकर 147 (100), 190 (98), 590 (99)

वैकल्पिक जैन स्तोक भूषण

रोल नं. (भूषण/कोविद/विभाकर- प्राप्तांक) 527 (54), कोविद 178 (83), 738 (98), विभाकर 146 (38)

वैकल्पिक जैन संस्कृत प्राकृत

रोल नं. (कोविद/मनीषी - प्राप्तांक) कोविद 206 (88), मनीषी 588 (88)

महत्त्वपूर्ण सूचना

परीक्षा परिणाम तथा रोल नं. संबंधित सहायता हेतु मो.नं. **7231933008** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

स्वयं क्षमाशील बनो

रजका (मेवाड़ में होने वाला एक प्रकार की घास) ऊपर-ऊपर से काट लिया जाता है, वह पुन: पनप जाता है। गेहूँ, बाजरा आदि की फसलों को काट लेने के बाद जमीन में उसकी जड़ें रहने नहीं दी जाती, जिससे वे वापस पनपते नहीं हैं। क्षमा रजके की तरह नहीं होनी चाहिए। अभी क्षमायाचना तो की पर वैर-विरोध की जड़ें पड़ी ही रह गई। वैसी क्षमा औपचारिक है। उससे जीवन तनाव मुक्त नहीं हो सकता। क्षमा से आह्लाद-भाव-प्रसन्नता प्रकट होनी चाहिए। वह तब हो सकती है, जब वैर-विरोध का बीज समूल नष्ट कर दिया जाए। उसके कोई भाव दिल पर अंकित नहीं रहने चाहिए। रजके की तरह ऊपर-ऊपर से की गई क्षमा याचना सार्थक नहीं होगी। सार्थक वह होगी जिसकी जड़ें उखाड़ दी जाए। यानी वैर-विरोध को समूल नष्ट कर देना।

(प्रणव)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

मोटिवेशनल फोरम

Sadhumargi Women's Motivational Forum

आओ मिलाएँ हाथ और हुँकार भरें,
भ्रूणहत्या का एक साथ,
हम बहिष्कार करें।।
महावीर की संतान हम
'जीओ और जीने दो' का प्रण करेंगे।
आज ही भ्रूणहत्या त्याग
संकल्प-पत्र भरेंगे।।

- पूरे देश में लगभग 1000 से अधिक श्रावक-श्राविकाएँ यह संकल्प-पत्र भर चुके हैं। यदि अब तक आपने संकल्प-पत्र नहीं भरा है तो शीघ्र ही यह फॉर्म भरें।
- भ्रूणहत्या त्याग संकल्प-पत्र 18 वर्ष से 99 वर्ष आयु के सकल जैन समाज के श्रावक-श्राविकाएँ भर सकते हैं।
- यह फॉर्म ऑफलाइन या ऑनलाइन दोनों प्रकार से उपलब्ध है।
- ऑनलाइन फॉर्म हेतु QR कोड को स्कैन करके संकल्प-पत्र भर सकते हैं। ऑफलाइन फॉर्म का प्रिंट निकलवाकर भरवाएँ एवं 7231033008 नंबर पर वॉट्सऐप द्वारा भेज सकते हैं।
- भगवान महावीर जन्मकल्याणक से प्रारंभ इस अभियान में शीघ्र ही जुड़ें।

वुमेन्स मोटिवेशनल फोरम

(अन्तर्गत श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति)

Presents

भ्रूणहत्या त्याग संकल्प-पत्र

क्र.सं.	अंचल	ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन	ऑफलाइन	संयोजिका द्वारा प्राप्त (फॉर्म)	कुल रजिस्ट्रेशन
1.	मेवाड़	158	–	–	158
2.	बीकानेर–मारवाड़	67	1	156	224
3.	जयपुर–ब्यावर	66	3	–	69
4.	मालवा	99	2	–	101
5.	छत्तीसगढ़–ओडिशा	150	55	56	261
6.	तमिलनाडु	35	–	–	35
7.	कर्नाटक–आंध्रप्रदेश	20	–	–	20
8.	मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई.	77	1	–	78
9.	महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश	93	1	–	94
10.	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–झारखंड–आंशिक उड़ीसा	14	–	–	14
11.	पूर्वोत्तर	22	–	–	22
12.	दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–उत्तरप्रदेश	22	–	–	22
कुल		**823**	**63**	**212**	**1098**

युवती शक्ति

ये कंटकाकीर्ण मार्ग में रास्ता बनाती युवतियाँ।
ये हर पड़ाव पर धर्म में आगे बढ़ती युवतियाँ।।

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति और प्रत्येक अंचल व उनकी स्थानीय संयोजिकाओं के तत्त्वावधान में 'युवती शक्ति' द्वारा अनेक कार्यक्रम कराए गए। जुलाई माह के हर शनिवार को 'चिट–चेट' नामक एक रोचक गतिविधि करवाई गई। इसके अंतर्गत अनेक प्रकार (Bingo game, MCQ The Karma Box) के माध्यम से युवतियों को 'सामायिक' व 'आठ कर्म' का ज्ञान दिया गया। इस No Losers-No Winners गतिविधि में सभी युवतियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

Fill it with your Creativity नामक एक प्रतियोगिता 'व्यसन मुक्त भारत' पर रखी गई। इसमें कुल 63 युवतियों ने भाग लिया और इसमें से प्रथम 9 विजेता निकाले गए। इस प्रतियोगिता में प्रथम 3 अंचल जिन्होंने अधिकाधिक प्रतिक्रिया (Response) दिया –

1. पूर्वोत्तर अंचल
2. मालवा अंचल
3. मुंबई–गुजरात अंचल

प्रथम 3 क्षेत्र जिन्होंने अधिकाधिक प्रतिक्रिया दी –

1. मुंबई 2. बेंगलुरु 3. सूरत

प्रथम 9 विजेता जिन्हें पुरकृस्त किया जाएगा –

	नाम	शहर	अंचल
1.	प्रज्ञा बांठिया	कोलकाता	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–झारखण्ड–आंशिक उड़ीसा
2.	यश्वी बांठिया	कोलकाता	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–झारखण्ड–आंशिक उड़ीसा
3.	छवि गुरलिया	बेंगलुरु	कर्नाटक–आंध्रप्रदेश
4.	प्रीति पितलिया	हैदराबाद	कर्नाटक–आंध्रप्रदेश
5.	ऐश्वर्या सुराणा	सूरत	मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई.
6.	स्वास्तिका मुणोत	रतलाम	मालवा
7.	अक्षि भण्डारी	कंजार्डा	मालवा
8.	दिशी सेठिया	उज्जैन	मालवा
9.	मितांशी जैन	बालोद	छत्तीसगढ़–उड़ीसा अंचल

नोट :– चिट–चेट गतिविधि के माध्यम से जैन सिद्धांत बत्तीसी पूर्ण हो जाने के पश्चात् अंचल एवं क्षेत्रीय संयोजिकाओं की सहायता से जैन सिद्धांत बत्तीसी पर ऑफलाइन क्विज़ करवाए जाने की संभावना है। सभी युवतियों एवं संघ सदस्याओं से अनुरोध है कि आगे भी सभी गतिविधियों में भाग लेकर ज्ञानार्जन करें और जनकल्याण हेतु अग्रसर हों।

आंचलिक तप-त्याग रिपोर्ट (जुलाई माह)

:: मेवाड़ अंचल ::

निम्बाहेड़ा	**बेले–बेले का एकांतर–** सुनिता जी कुदाल, **उपवास का एकांतर–** मंजू जी जारोली, मंजू जी सेठिया, **एकासन का एकान्तर–** प्रमिता जी कोठारी, पिंकी जी मारू, मंजू जी धींग, ऊर्जा जी चपलोत, कुसुम जी मारू, पुष्पा जी सोनी, कलाबाई मारू, मोनिका जी पोरवाल, मंजू जी गांग, चंदा जी धींग (मोटिवेशनल फोरम के तत्त्व ज्ञानम् गतिविधि में 24 महिलाओं की उपस्थिति रही। महिला मण्डल द्वारा पारितोषिक दिया गया। केसरिया कार्यशाला में 21 महिलाओं ने भाग लिया।)
असावरा	**मासखमण–** मंजू जी लोढ़ा, मधुदेवी मादरेचा, ज्योति जी पटवा, **21 की तपस्या (गतिमान)–** कैलाशबाई बाबेल, **15 की तपस्या–** कमलाबाई भंसाली, **12 की तपस्या (गतिमान)–** कमलाबाई, **11 की तपस्या–** विनिता जी मादरेचा, **9 की तपस्या–** कविता जी नाहर, प्रेमदेवी लोढ़ा
मंगलवाड़	**15 की तपस्या–** रतनबाई ओस्तवाल, पुष्पाबाई डांगी, **9 की तपस्या–** हर्षिता जी ओस्तवाल, **आयंबिल का मासखमण–** पुष्पा जी सिसोदिया
बम्बोरा	**एकासन का मासखमण–** नीलम जी पितलिया
चित्तौड़गढ़	**उपवास का मासखमण–** पिंकी जी चण्डालिया

बड़ीसादड़ी	9 **की तपस्या–** चन्दनबाला जी मेहता
भीण्डर	8 **की तपस्या–** लक्ष्मीबाई नंदावत, सुशीला जी कोठारी
प्रतापगढ़	8 **की तपस्या–** समता जी चिप्पड़, **एकासन का मासखमण–** प्रियंका जी चिप्पड़, **बियासन का मासखमण–** निर्मला जी धींग
भीम	**उपवास का मासखमण–** साधना जी गुरलिया
:: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::	
नोखा	22 **की तपस्या (गतिमान)–** प्रियंका जी कांकरिया, 11 **की तपस्या–** भारती जी लुणिया, कीर्ति जी भूरा
:: कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल ::	
बेंगलुरु	**सिद्धि तप–** अंकिता जी कटारिया, 30 **की तपस्या–** कमलेशबाई बोहरा, 21 **की तपस्या–** ममता जी दक, 11 **की तपस्या–** किरणबाई टुकलिया, 9 **की तपस्या–** कविता जी कोठारी
:: मुंबई-गुजरात अंचल ::	
सूरत	31 **उपवास के एक मासखमण–** चंचल जी पितलिया
:: महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ::	
नागपुर	11 **की तपस्या–** सरिता जी सुराणा, शर्मिष्ठा जी लोढ़ा
धुलिया	31 **उपवास–** चंदाबाई कांकरिया, 21 **उपवास–** बादामबाई बंब, 9 **उपवास–** हिरल जी चौरड़िया
नासिक	31 **उपवास–** लीला जी आंचलिया, 9 **उपवास–** विधि जी चौरड़िया
:: पूर्वोत्तर अंचल ::	
सिलचर	**अठाई तप–** रिया जी भूरा, रानीका जी मुणोत, **बियासन के मासखमण–** सुशीला जी सोनावत, **सावन एकांतर तप–** इंद्रादेवी जी संचेती, सुमन जी देवी संचेती, शांतादेवी संचेती, प्रमिला जी भूरा, मंजू जी कांकरिया, आरती जी सोनावत, रेणु जी पटवा, शिखा जी खटोल, **एकासन एकांतर–** कंचन जी सिपानी

धार्मिक शिविर

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के तत्वावधान में देशभर के अनेक क्षेत्रों में चातुर्मासार्थ विराजित चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयान्तर्गत शिविरों का आयोजन किया गया।

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	क्र.सं.	विषय	क्षेत्र
1.	अहोदानम्	मंगलवाड़	8.	संस्कार शिविर	प्रतापगढ़
2.	वक्तत्व कला	मंगलवाड़	9.	संस्कार शिविर	निम्बाहेड़ा
3.	आगम बत्तीसी, प्रतिक्रमण भक्तामर, चौबीस तीर्थंकर	बड़ीसादड़ी	10.	कम खाना, गम खाना, नम जाना	चित्तौड़गढ़
			11.	माटी कहे कुम्हार से	चित्तौड़गढ़
4.	दाता बने आगम की दृष्टि	कानोड़	12.	ज्ञान आराधना शिविर	देशनोक
5.	शुद्ध भिक्षांजलि	भीलवाड़ा	13.	बत्तीसवाँ आवश्यक सूत्र	देशनोक
6.	शुद्ध भिक्षांजलि	भींडर	14.	ज्ञान शिविर	देशनाक
7.	समता साधिका शिविर	प्रतापगढ़	15.	हलुकर्मी व भारीकर्मी	नोखा

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र
16.	जैन सिद्धांत बत्तीसी	नोखा
17.	कर्म क्विज़	ब्यावर
18.	102 बोल एवं अठाणु बोल का थोकड़ा	ब्यावर
19.	संसार परित्त का माध्यम	जयपुर
20.	यतना और विवेक, श्रावक बने नेक	जयपुर
21.	वेस्ट से बेस्ट की ओर	जयपुर
22.	बारह भावना	जयपुर
23.	32 सूत्रीय शिविर	जयपुर
24.	Red signal to green signal	जयपुर
25.	आध्यात्मिक आरोग्यम्	जयपुर
26.	Learn to Turn	जयपुर
27.	L3 - Look, Listen, Learn	जयपुर
28.	श्रुत आराधना	जयपुर
29.	Busy Life Easy Dharam	जयपुर
30.	तीर्थंकर भगवान के गुण	ब्यावर
31.	करें लोक की सैर	ब्यावर
32.	जैन सिद्धांत बत्तीसी के 32वें सिद्धांत के प्रथम 4 पॉइंट	ब्यावर
33.	सावधान! आगे दुर्गति है	ब्यावर
34.	लोक की जानकारी, भिक्षाचरी के 110 दोष, आवश्यक सूत्र की पाटी के अर्थ की व्याख्या	राजनांदगाँव
35.	ध्यान शिविर	डौंडीलोहारा
36.	34 अतिशय, 14 नियम, संथारा के 18 बोल	नगरी
37.	Busy Life Easy Dharam	सूरत
38.	अहोदानम्	सूरत
39.	Girl Empowerment	सूरत
40.	अहोदानम्	नागपुर
41.	स्वाध्याय शिविर	धुलिया
42.	Food Poison	धुलिया
43.	शब्दों के सागर जिन शासन के नाम	धुलिया
44.	अहोदानम् महादानम्	अकोला
45.	आओ लोक की सैर करें	बेल्लारी

श्रमणोपासक

मित्र दृष्टि रखें

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

कम से कम धर्मस्थान में तो भव्यात्माओं को ज्यादा से ज्यादा सदुपयोग करना चाहिए। धर्मस्थान में बैठते समय श्रावक यह समझें कि मैं सभी जीवों का मित्र हूँ। हरिभद्रसूरि प्रतिपादित आठ दृष्टियों में से एक मित्र दृष्टि भी है। सभी प्राणियों के साथ उसके जीवन में अहिंसा की भावना आ जानी चाहिए, जिसका तात्पर्य है-

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मिती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ।।

इस प्रकार सभी के प्रति आत्मीय व्यवहार लेकर जितने समय तक भी वह चलता है, उसकी आत्मा में एक विशेष प्रकार की आत्मीयता एवं सुखानुभूति जागृत होती है। लेकिन आज धर्मस्थान में रहकर भी अशुभ अध्यवसायों के माध्यम से कर्मों के बन्धन की स्थिति बनती है तो वह आत्मा के लिए घातक है, क्योंकि कहा है-

अन्यस्थाने कृतं पापं, धर्मस्थाने विमुच्यते।
धर्मस्थाने कृतं पापं, वज्रलेषो भविष्यति।।

अन्य स्थानों पर किये गये पापों से धर्म स्थान में छुटकारा मिलता है, पर धर्म स्थान में पाप-क्रिया करके जो बंध की स्थिति बनती है उसका विमोचन कहाँ होगा?

साभार- नानेशवाणी-16 (ऐसे जीएं-2)

कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल प्रवास

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का कर्नाटक-आन्ध्रप्रदेश अंचल के हैदराबाद, बेल्लारी, हुबली, कडूर, चिकमंगलूर, हासन, होलेनरसिपुर व मैसूर आदि क्षेत्रों का प्रवास 27 से 30 जुलाई को सम्पन्न हुआ। इस दौरान हैदराबाद में शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2, बेल्लारी में शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के दर्शन-वंदन करने एवं मार्गदर्शन प्राप्त करने का लाभ सहज ही प्राप्त हुआ। सभी प्रवास क्षेत्रों में हुई सभाओं का शुभारंभ नवकार महामंत्र की आराधना से हुआ। तत्पश्चात् युवा साथियों का पारस्परिक परिचय कराया गया। प्रवासी दल द्वारा उत्क्रान्ति, समता शाखा, महत्तम महोत्सव, तरुण-शक्ति, धार्मिक प्रतियोगिताओं, सामाजिक कार्यक्रमों, व्यसनमुक्ति एवं संगठन उन्नयन हेतु विशेष प्रभावना की गई। उत्क्रान्ति की प्रभावना से प्रेरित होकर अनेक परिवारों ने उत्क्रान्ति संकल्प पत्र भरे। उत्क्रान्ति की प्रभावना एवं परिपालना हेतु हैदराबाद में उत्क्रान्ति मॉनिटरिंग टीम बनाई गई, जिसमें नियमानुसार 12 सदस्यों को शामिल किया गया। प्रवास के दौरान संगठन की मजबूती हेतु बेल्लारी में नवीन समता युवा शाखा का गठन किया गया।

प्रवासी दल द्वारा तरुण शक्ति के तहत तरुण युवा साथियों को संघ से जोड़ने के लिए चल रही मुहिम 'Bring Another You' एवं ज्ञानार्जन में 'ALL IS WELL' में युवाओं को प्रतिक्रमण कंठस्थ करने की भी प्रभावना की गई। महत्तम महोत्सव के प्रकल्प प्रतिक्रमण याद करने हेतु भी अनेक फॉर्म भरे गए। सभी प्रवास क्षेत्रों में प्रवासी दल का आत्मीय स्वागत अभिनंदन किया गया। युवा साथियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाते हुए संघ विकास हेतु सकारात्मक सुझावों का आदान-प्रदान किया। नियमावली का पूर्ण रूप से पालन किया गया। आतिथ्य सत्कार और सुन्दर व्यवस्थाओं के लिए सभी संघों का आभार ज्ञापित किया गया।

-राष्ट्रीय मंत्री, कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल

तीन दिवसीय जैन युवा शिविर सम्पन्न

UNLOCK YOUR POTENTIAL

उदयपुर। शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-9 के सान्निध्य में दिनांक 28 से 30 जुलाई 2023 को पौषधशाला भवन में अनलॉक योर पोटेंशियल (UNLOCK YOUR POTENTIAL) युवा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री ऋतु श्री जी म.सा., साध्वी श्री जलज श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री गुंजन श्री जी म.सा. सहित साध्वीवर्याओं ने जीवन मंत्र व राष्ट्र, संघ-समाज के उत्थान में युवाओं की भूमिका, मनुष्य में छिपी आन्तरिक शक्ति को पहचानने व एक अच्छा मानव बनने के लिए अपने आस-पास के वातावरण को श्रेष्ठ बनाने आदि अनेक विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। प्रतिभागी युवा अत्यन्त उत्साह एवं नई ऊर्जा से सराबोर दिखे।

साध्वी श्री ऋतु श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जो परिवार को साथ लेकर चलता है वह संघ पर भी अपना प्रभाव छोड़ता है तथा उन्नति में सहायक बनता है। हमें हमारे समय का सामंजस्य व सोच का दायरा बढ़ाकर कार्य करना होगा। हम जिन पर श्रद्धा रखते हैं, सदैव उनसे मांगते रहते हैं, उनको हम समर्पण कब करेंगे?

साध्वी श्री जलज श्री जी म.सा. ने फरमाया कि बिना पुण्यवाणी कुछ नहीं मिलता, आप वर्तमान में धर्म तो कर रहे हैं, पर अपने निज कार्य में सफल नहीं हो रहे तो आप धर्म को दोष नहीं दे सकते। पुण्यवाणी का बंध श्रद्धा से होता है। पुरुषों ने धर्म करना महिलाओं को सौंप दिया है। याद रखें कि स्वयं का कल्याण स्वयं द्वारा किए गए पुरुषार्थ से ही होगा।

साध्वी श्री गुंजन श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हमारे आसपास का वातावरण व स्वयं की खोज हमारी सोच व विकास का निर्धारण करती है। मर्यादा मे रहेंगे तो प्रगति पथ पर बढ़ेगें।

शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा. ने युवाओं की संघ व समाज में भूमिका व दायित्व पर प्रतिदिन शुभ संदेश दिये। **–मंत्री**

एक दिवसीय क्षेत्रीय शिविर सम्पन्न

बेगूँ। शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा. आदि ठाणा–5 के पावन सानिध्य में एक दिवसीय क्षेत्रीय शिविर का आयोजन 23 जुलाई 2023 को किया गया था, जिसमें मेवाड़ अंचल से 135 युवाओं ने भागीदारी निभाई। शिविर में शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीवन असंस्कारी है। जीवन में संस्कारों की बहुत आवश्यकता है।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो व्यक्ति हमें रास्ता बता रहा है, उस पर विश्वास होना चाहिए। श्रावक धर्म की नींव सम्यक्त्व है। श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने श्रावक से सुश्रावक के बिन्दु समझाकर उनका पालन करने की प्रेरणा दी। श्री राजन मुनि जी म.सा. ने श्रावक के विषय में विवेचना की। शिविर के अंत में श्री मयंक मुनि जी म.सा. द्वारा गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया गया। शिविर में श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सहित अनेक सदस्यों ने ज्ञान–ध्यान का लाभ लिया।

–राष्ट्रीय मंत्री, मेवाड़ अंचल

श्रमणोपासक

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी **15–16 अक्टूबर 2023** का धार्मिक अंक '**धर्म स्थान संबंधी विवेक**' पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ– लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

– श्रमणोपासक टीम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (जुलाई माह)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	02–07	09–07	16–07	24–07	30–07
1.	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1743	1749	1616	1560	1481
		आंचलिक क्षेत्र	95	94	94	90	92
2.	बीकानेर–मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	987	783	910	854	725
		आंचलिक क्षेत्र	47	45	48	46	47
3.	जयपुर–ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	701	431	584	488	335
		आंचलिक क्षेत्र	23	22	22	23	23
4.	मालवा	आंचलिक उपस्थिति	1878	1577	1275	1595	1213
		आंचलिक क्षेत्र	79	79	75	79	78
5.	छत्तीसगढ़–उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	3030	2755	2566	2384	2447
		आंचलिक क्षेत्र	158	153	153	151	152
6.	कर्नाटक–आंध्रप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	618	493	531	494	314
		आंचलिक क्षेत्र	30	31	30	30	26
7.	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	398	290	385	305	295
		आंचलिक क्षेत्र	14	12	14	14	14
8.	मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई.	आंचलिक उपस्थिति	830	616	735	684	668
		आंचलिक क्षेत्र	29	33	31	34	32
9.	महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	580	614	591	581	661
		आंचलिक क्षेत्र	49	51	50	50	55
10.	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–झारखण्ड–आंशिक उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	433	347	424	337	357
		आंचलिक क्षेत्र	31	31	31	30	28
11.	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	335	256	243	221	257
		आंचलिक क्षेत्र	21	22	22	22	21
12.	दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–उत्तरप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	94	100	95	102	92
		आंचलिक क्षेत्र	7	7	7	6	6
13.	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	17	14	14	13	15
		आंचलिक क्षेत्र	6	7	7	7	8
	संयुक्त रिपोर्ट						
	कुल उपस्थिति		11644	10025	9969	9618	8860
	कुल क्षेत्र		589	587	584	582	582

समता शाखा में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज करवाने वाले संघों की सूची (मासिक)

क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति	क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति
1.	राजनांदगाँव	2050	6.	सूरत	944
2.	नीमच	1920	7.	ब्यावर (उत्क्रांति ग्राम)	905
3.	दुर्ग	1685	8.	चेन्नई	824
4.	रतलाम	1510	9.	नोखा मंडी	695
5.	रायपुर	1338	10.	अहमदाबाद	675

जय गुरु नाना | जय महावीराय नमः | जय गुरु राम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

आत्मीय निवेदन

धर्म - ध्यान - आराधना का पावन स्थल - समता भवन

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ धर्म–ध्यान–आध्यात्मिकता के पर्याय समता भवन के निर्माण हेतु कृतसंकल्पित है। 'समता भवन निर्माण समिति' के रूप में विशिष्ट प्रवृत्ति संचालित करते हुए श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ पूरे देशभर में 10 नवीन समता भवन प्रतिवर्ष बनाने का लक्ष्य रखता है। इस महाकुंभ में जो भी दानवीर, भामाशाह अर्थ सहयोग प्रदान करना चाहते हैं, वे कुल सहयोग राशि रुपये 25 लाख का 1 प्रतिशत (25,000/– रुपये) से लेकर 20 प्रतिशत तक स्वेच्छा से सहयोग प्रदान कर अपने कर्मों की निर्जरा का लाभ ले सकते हैं। आपका यह मुक्तहस्त योगदान आने वाली भावी पीढ़ियों के मानस पटल पर चिरस्मरणीय छवि के रूप में अंकित होगा तथा वहाँ होने वाली धर्माराधना से मिलने वाले लाभ में आप भी परोक्ष रूप से सहभागी बनेंगे। यह सहयोग राशि श्रीसंघ के अंतर्गत बनने वाले प्रत्येक समता भवन हेतु रहेगी।

आप अपनी सहयोग राशि/प्रतिशत की स्वीकृति राष्ट्रीय अध्यक्ष/महामंत्री/कोषाध्यक्ष/संयोजक महोदय को लिखित में भिजवा सकते हैं। पुनश्चः सविनय निवेदन है कि 'समता भवन निर्माण समिति' से जुड़कर श्रीसंघ के अंतर्गत बनने वाले समता भवनों में अधिक से अधिक सहभागी बनें। हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि आप इस निवेदन को स्वीकार करते हुए अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करेंगे।

अब तक श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ के सहयोगित समता भवन

निर्माणाधीन – 8 प्रस्तावित – 11

अन्य किसी जानकारी हेतु मो. 7665001008 पर संपर्क करें।

श्रीसंघ के सहयोग से निर्मित होने वाले समता भवनों हेतु समता भवन निर्माण नियमावली बनी हुई है। यदि किसी महानुभाव को इसकी आवश्यकता हो तो केन्द्रीय कार्यालय से सम्पर्क कर मंगवा सकते हैं।

निवेदक

शांतिलाल सांड

संयोजक, समता भवन निर्माण समिति

जय गुरू नाना | जय महावीराय नमः | जय गुरू राम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

- क्या आप प्रोफेशनल डिग्री लेना चाहते हैं
- स्नातक/स्नातकोत्तर/फुलटाईम कोर्स करना चाहते हैं
- भारत/विदेश में शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं
- अपने कॅरियर को विकास के पंख देना चाहते हैं

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ लाया है

आचार्य श्री श्रीलाल उच्च शिक्षा योजना

जिसमें एस बी आई बैंक की सहायता से प्रदान किया जा रहा है

"₹10 लाख तक ब्याज मुक्त ऋण"

Interest free for study time + Moratorium period.

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

8306098040

(प्रात: 10 बजे से सायं 5 बजे तक)

SBI

अब तक 242 छात्र योजना से लाभान्वित
(लगभग 11.95 करोड़ रुपये)

योजना का पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन फार्म www.sadhumargi.com/forms पर उपलब्ध।

पात्रता हेतु मानदंड –

- ✓ कक्षा 10 और 12 में प्रथम श्रेणी प्राप्त किये है।
- ✓ स्नातक/स्नातकोत्तर/फुलटाईम कोर्स हेतु भारत या विदेश में मान्यता प्राप्त संस्थान में प्रवेशित या प्रक्रियाधीन।
- ✓ शिक्षा हेतु सहायता राशि 7.50 लाख रुपये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के माध्यम से।
- ✓ शिक्षण शुल्क एवं परीक्षा शुल्क सीधे कालेज/संस्थान/विश्वविद्यालय को प्रदान।
- ✓ पुनर्भुगतान – कोर्स समाप्ति के 1 वर्ष या रोजगार प्राप्ति के 6 महीने पश्चात् जो भी पहले हो।

SCAN ME

Scan or visit website
www.sadhumargi.com/forms

संजय भूरा
संयोजक – आचार्य श्री श्रीलाल उच्चशिक्षा योजना
9810016751
(दोपहर 4 बजे से सांय 6 बजे तक)

* Loan approval subject to scrutiny by State Bank of India and thier terms & condition shall apply.

राम चमकते भानु समाना

त्रि दिवसीय
बंगाल बिहार झारखण्ड नेपाल भूटान आंशिक ओडिशा अंचल
(उत्तर बंगाल, बिहार, नेपाल क्षेत्र)
प्रवास सम्पन्न
दिनांक 10 अगस्त से 12 अगस्त 2023

प्रवासी दल

राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, आँचलिक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री के साथ साथ
श्री सुमति कुमार सेठिया, श्री राजीव डागा (कार्य समिति सदस्य)
श्री प्रकाश दुगड़ (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री अ.भा. सा. जैन समता युवा संघ)

वीर परिवार से मुलाकात

महाप्रभावक की घोषणा
श्री अमरचन्दजी बैद
वीरगंज (नेपाल)

प्रवास स्थल

दिनहाटा, कूचबिहार, तुफानगंज, अलीपुरद्वार, सिलिगुड़ी, इस्लामपुर (पश्चिम बंगाल)
किशनगंज, फारबिसगंज (बिहार)
विराटनगर, जनकपुर (नेपाल)

दिनहाटा में
श्री भोजराजजी सेठिया
द्वारा 2 पुस्तक
व विराटनगर में
श्री देवेन्द्रजी सेठिया द्वारा
1 पुस्तक वार्षिक
प्रकाशन में सहयोग की
घोषणा

इदं न मम
की 11 व्यक्तियों
द्वारा नूतन घोषणा व
अनेक नवीनीकरण

संघ आबद्धता
कूचबिहार, तुफानगंज, अलीपुरद्वार
सिलीगुड़ी, इस्लामपुर

विराटनगर में राष्ट्रीय समता भवन
प्रकल्प में व फारबीसगंज में
आंचलिक समता भवन हेतु
1 प्रतिशत की घोषणा

नूतन निर्माणाधीन समता भवन
श्री अ.भा. सा. जैन संघ को समर्पित
स्व. सम्पतलालजी सुरजी देवी डागा की
स्मृति में श्री सुरेन्द्रजी डागा परिवार
इस्लामपुर

- संघ सदस्यों में सेवा भावों का जागरण।
- लगभग सभी प्रवास स्थलों पर समता शाखा, पाठशाला, इदं न मम, ग्लोबल कार्ड तथा अन्य आयामों की प्रभावना व सभी आयामों के स्थानीय प्रभारी की नियुक्ति।
- विराटनगर में नवीन अध्यक्ष व महामंत्री का मनोनयन

राम चमकते भानु समाना

OPPORTUNITY FOR CEO/COO

at

Shri Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh

- Are you a visionary leader committed to making a lasting impact on our world?
- Do you have a passion for driving positive change and creating a better future?
- If so, we invite you to join us as the CEO/COO of Shri Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh.

Position Overview

As our CEO, you will play a pivotal role in shaping and executing our strategic vision. You'll have the opportunity to lead a passionate team, collaborate with key stakeholders, and drive meaningful change on a global scale.Your responsibilities will include:-

Strategic Leadership

Develop and execute a visionary strategy that aligns with our mission and maximizes our impact.

Team Empowerment

Lead, inspire, and mentor a diverse team of professionals, fostering a culture of innovation, collaboration, and excellence.

Stakeholder Engagement

Build and nurture relationships with government agencies, and other relevant stakeholders to enhance our reach and influence.

Resource Mobilization

Drive the initiative to figure out required resources and actions to get them on board.

Qualifications

- Proven leadership experience, ideally as a CEO or in a senior management role.
- Strong understanding of NGO.
- Exceptional strategic thinking and problem-solving skills.
- Excellent interpersonal and communication abilities.
- Track record of successful stakeholder engagement and resource mobilization.
- Passion for our mission and a commitment to driving positive change.

Location:
Bikaner

How to Apply:
Mail your Resume on
ho@sadhumargi.com

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी 'सिपानी' की पहचान

बेंगलोर जैसी महानगरी में वरिष्ठ नागरिकों एवं लाचार व्यक्तियों को सिपानी सदन में नि:शुल्क भोजन, वस्त्र एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। यह सौभाग्य है कि 10 वर्ष पूर्व शुरू की गई इस सेवा योजना का लाभ 100 व्यक्तियों से प्रारम्भ होकर आज 10 वर्षों की पूर्णता तक यह संख्या बढ़कर 400 हो गई है।

इस सेवा कार्य में इन नागरिकों को पूर्णत: सज्जित एम्बुलेंस, डॉक्टर एवं नर्सिंग देखभाल की सुविधा चौबीसों घण्टे उपलब्ध करवायी जा रही है।

सेवा के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए सिपानी फाउंडेशन ने वहाँ पर 60 कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है जो इन सब सुविधाओं के आधार स्तम्भ हैं।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन, 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
वाचनालय हेतु (केवल भारत में)	
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी। मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25100

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh